

॥ श्री गोकुलेशो जयति ॥
॥ श्री रमणेशो जयति ॥

श्री कल्लोल जी ग्रन्थ



नवम्

(श्रीमद् गोकुलेश लीलायां रसाब्धी सुधासिंधौ)



--: मूल :-

श्री कल्याण भट्ट मठपति जी

--: टीकाकार :-

पंडित लोकनाथ जी (गोकुलिया)
लैया वासी

श्री महामहोत्सव संवत् २०५७

नवम कल्लोलजी

अनुक्रमणिका

मंगलाचरण	१
प्रथम तरंग	३
द्वितीय तरंग	६
तृतीय तरंग	१०
चतुर्थ तरंग	१४
पंचम तरंग	१७
षष्ठम् तरंग	१९
सप्तम् तरंग	२२
अष्टम् तरंग	२५
नवम् तरंग	२९
दशम् तरंग	३१
एकादशम् तरंग	३४

नवम् कल्लोल जी

॥ प्रथम तरंग ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ प्रथम तरंग लिख्यते ॥१॥

श्लोक -- "निःसाधन जनोद्वार सत्परे गोकुलेश्वरं ॥

नवम् कल्लोल तत्कृपातोडन संब्रवे ॥१॥

याको अर्थ -- श्रीमद् गोकुल के जीवन आधार श्री गोकुलेश प्रभुन के महा कृपापात्र अन्तरंग भक्तवर श्री कल्याणभट्टजी अब नवम कल्लोल वर्णन करें हैं । ता पर श्री रमणलालजी महाराज की आज्ञा सूं भाषानुवाद करें हैं ॥ तामें वस्तु निरदोष रूप मंगलमय यह प्रथम श्लोक है कि --

श्लोक -- गतमध्ययमादिति यमुनादनात्वातटे तस्या

भक्तेसहराजं त्याजिस्यत्रीभृतमप्ये कृतनः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं के श्रीयमुनाजी पर आये भये तब वामें स्नान करिकें वाके तट पर निज भक्तन के संग विराजमान "द्वितीय" करुणासागर महाप्रभुन के सन्मुख आयके श्री यमुनाजी आगेहोयवे वारे वा विरह कलेश समूहन को निरादर कर जो गंगाजी पर उछल रह्यो अपनो करुणा समूह है, तासूं एकान्त में प्रथम निवेदन कियो, जो गंगाजी के तट पर कछुक दिन विराजवेरूप अर्थ की विज्ञापना करती भई हैं, तामें सत्यव्रत भगवान यह श्री महाप्रभुजी तो वाकों अंगीकार करिके अपने घर में पधारके प्रथम काश्मीर देशपति ने कछुक दिन श्री आप गोकुल में नहिं विराजें या प्रकार सूं करी जो विज्ञापना है, मानो याकूं मानत ही मथुरा नाम ज्योतिषी कूं बुलवायके शूकर क्षेत्र की यात्रा अर्थ कार्तिक के शुक्लपक्ष की पंचमी मुहूरत कूं निश्चय करते भये हैं ॥ श्री गंगाजी के कृतार्थ ताके कारण रूप पधार रहे या महाप्रभुन के संग प्रस्थान करिवे लिये सगरे भक्त, वैष्णव, सुहृद तथा स्वजन, स्वजाति संगरे ही प्रेम सूं उद्यम करत भये हैं, के मार्ग में बहोत कलेश होय है परदेश है, सो हमकूं तो अवश्य ही पधारनो है । तुम काहे कूं कलेश पावो हो, इत्यादि

प्रकार सूं निषेध करते भये हैं । तोहू न मान रहे विनकूं संग चलिवे में आज्ञा हू करते भये हैं, के ऐसे है तो मति चलो, श्री प्राणनाथजी वा पंचमी के दिन श्री नाथजी की सेवा को राजभोग पर्यन्त करिकें अपने सगे, सम्बन्धी, भक्त, वैष्णवन के संग भोजन कूं करिके कृपासिंधु श्री महाप्रभुजी सगरे सम्बन्धी ज्ञाति वारे, के यथायोग्य, देवे योग्य, मासीक स्वीकार करिके के सगरे निरवाहक कूं स्वयं अंगीकारकरिके तथा विनके अर्थ सुखपाल वाहन गाड़ी आदि सामग्री कूं क्षणुं सूं ही सिद्ध करायके तथा सबन को कर्ज देवे वारे निर्धनीन कूं बहोत धन कूं दे देकर निमर्याद कृपा सूं विन सबन कूं करज सूं छुड़ाये ब्राह्मणन के प्रति गाय, वस्त्र, सुवरण, रत्न आदि बहोत प्रकार के धनन कूं भली प्रकार दान करिके प्रस्थान करिके श्री महाप्रभुजी वृहद वन के निकट ही विराजमान होते भये हैं । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के श्री महाप्रभुजी यद्यपि लौकिक रीति सूं ही गोकुल कूं त्याग कियो है, वास्तव में तो त्याग नहीं कियो है । तो आधिदैविक जो श्री गोकुल है सो तो प्रीतम के संग ही चली है वाकूं यह श्री महाप्रभुजी अनुमोदन नहीं करते भये हैं । तामें जो तो आधिभौतिक श्री गोकुल है सो तो महाप्रभुन के संग चलिवे लिये कृपाशक्ति सों विज्ञापना करती भई है । तब वाकूं सो कृपाशक्ति जी या प्रकार सूं समाधान करती भई हैं के "हे गोकुल प्रियवर श्री महाप्रभुजी गंगाजी के तथा वाराहदेव के, वा गोत्र के तथा वहां के निवासी अपने भक्तन के, वैसे चन्द्रमुखीन के हू मनोरथ समूहन को वेग ही पूरण करिके फेर पधारके तिहारे संग यह जो तिहारो आध्यात्मिक स्वरूप है याकूं हू अपने निवास सूं कृतार्थ करेंगे । वासूं अब तो अलौकिक लीला रस आवेश वारे प्राणनाथ के संग तुम मति आग्रह करियो ।" ऐसे वचन कहेकर समाधान करती भई हैं । ऐसे वचन सुनकर सो श्री गोकुल प्रसन्न होय जाती भई हैं । और जहां यहां ईश्वरेश्वर प्राणप्रभुजी विराजे हैं ऐसे सो स्थल तो महाप्रभुजी के डेरा सूं वा महाप्रभुन के सगे सम्बन्धी भक्त वैष्णवन के असंक्षात डेरान सूं अलौकिक अनन्त लक्ष्मी सूं मिल्यो भयो महानगर भाव कूं प्राप्त होतो भयो है । अत्यन्त ही शोभायमान होतो भयो है । गानन ते पाठ हर्ष विनोद स्त्री, पुरुष, गाय, हस्ती, घोड़ा, रथ, ऊंट अनेक प्रकार के गाढ़ा वैसे बड़े प्रसन्न होय रहे मालाकार, व्यौपारीन के समूह, गांधी, के तेली, के नाई, रजकादिकन सूं, भरे बाजार, गोप गोपीन सूं, हरी कथान सूं, सदैव श्रीनाथजी के सेवा के

सगरे प्रकार समूहन सूं, के अलौकिक प्रेम प्रकर्ष सों, विलास सों परम शोभा पराय सौन्दर्य समूहन सों, के वा ब्राह्मण स्वजन ज्ञाती वारेन सूं, बाल, तरुण, बूढ़ेन सूं, सो स्थल अत्यन्त ही शोभायमान होतो भयो है और हरि प्रबोधिनी के दिन में सुन्दर गान नृत्यन सूं मनोहर जागरण उत्सव कूं आगे सो विशेष हू विशेष करिके वहां के निवासी सगरे जनन कूं कृतार्थ करत कालिन्दी कूं आनन्दित करत प्रिय श्री महाप्रभुजी सात दिन वहां निवास करिके द्वादसी के दिन पारणा करिके यहां सूं प्रस्थान करते भये हैं । कृपासिन्धु श्रीजी अपने निवास सूं ब्रह्माण्ड नाम तीरथ को शोभायमान करत भये हैं । तथा श्रीजी के जन्म नगर प्रयाग में संवास सूं दान कियो है सखी भाव जामें, ऐसे श्री गंगाजी में पल पल में अत्यन्त उच्छल रही करुणा सूं, श्रीजी के होयवे वारे वियोग सूं, अपने में होयवे वारे प्रबल हू वियोग सम्बन्धी कलेश भार कूं न विचार रही जो श्री यमुनाजी हैं वा पर अत्यन्त प्रसन्न होवत ही, श्री महाप्रभुजी या श्री यमुनाजी कूं वाके जल लेवे सूं के स्नान सूं रोम हर्ष वारो करत याके तट पर बीस दिन निवास करते भये हैं, और सो अत्यन्त कुटिल मूर्ख निर्लज्ज दुष्ट सन्यासी ये विचारके यह श्री गोकुल सूं चलें हूं हैं जो हूं ठहेरावुं तो ठहेर जायेंगे यासूं मेरी प्रतिष्ठा होयगी तासूं श्री गोकुल कूं त्याग कहे कर हू नहीं कर्यो है या प्रकार सूं देशपति हू या प्रभु पर क्रोध करेगो या प्रकार की इच्छा सूं ब्रह्मांड घाट पर ही मथुरासूं चौधरी तथा मथुरावासी दुष्टन को हूं महाप्रभुन के पास पठावतो भयो है । वे हू यहां आयके प्रभुन कूं दंडवत प्रणाम करिके हाथन कूं बांधके विनय करते भये हैं के "हे प्रभो आपके काशमीर के गमनागमन कष्ट कूं विचारके सन्यासी कूं बड़ो पश्चाताप भयो है तासों दया सहित ही विज्ञापना करे है के श्री आप अपने घर कूं, के गाम कूं त्यागि के दूर मति पधारो इहां ही बिराजो, हों कछू हू नहिं करुंगो, हों प्रसन्न हूं । या प्रकार को पत्र हू देशपति के पास भेज देवुंगो । जे देशपति मेरे वश ही है यासूं आप श्री मति डरपो । या प्रकार सूं वे चौधरी आदि कहे रहे हते । विनके वचन कूं अपेक्षा कर श्री महाप्रभुजी सजल मेघ की ध्वनी जैसे गम्भीर सुन्दर प्रगल्भ वचन कूं कहते भये हैं के ये तुम्हारो सन्यासी को है ? तुम्हारे वा सन्यासी कूं हम कबहू कहा कछू गिनैं हैं ? कहां कहां यह है कि नहीं है ऐसे वा पाखण्डी पापी कूं हम कछू विचारें हैं कहां ? हम याके वचन सूं ही श्री गोकुल सों

प्रस्थान करें हैं कहा ? के याके कहे कूं हमने कबहू कछू कियो है कहा ? देशपति के संग तो हमारो मधुर संवाद सो भयो है, तामें कोउ कारण सों ही जो कछु हमने अंगीकार कियो है सो वाकी प्रार्थना सों कियो है, वाकूं हम अपनी इच्छा सूं ही करें हैं, वामें हम काहू कों हू नहीं पूछत हैं, वामें कोऊ की बात हू हम नहीं सुनें हैं, वामें हम कोऊ की प्रसन्नता कों हू नहीं वांछें हैं, और काहू के क्रोध सों हम नहीं डरपें हैं, तथा देशपति के पास यह लिखेगो कहा, के याकी बुद्धि कूं कांसूं काके लिये को लिखावे है । मइ प्रसाद मधुरैः कटाक्षेयणंबशौ निनादानं चणै विद्वसे हे व्यापि प्रसन्ने किं महापरेण अप्रसन्ने कि महापरेणः, हे प्रभो वंशीनाद के अनुकूल विलास वारे मधुर कटाक्षन सों ही मेरे पर आप कृपा करे, श्री आप प्रसन्न हैं तो हमकूं औरन सों कहा अपेक्षा है । यदि आप प्रसन्न नहीं हैं तो औरन सों कहा सरे है । या प्रकार करुणामृत के प्रकार सूं सुन्दर, मधुर लीला वारे श्री गिरधारीजी में चित्त कूं लगाय के सदा विराज रहे, हे हमकूं या पापी की प्रसन्नता सूं कहा होयगो । सो तुम जाओ इहां सूं वेग ही जायके वासूं वैसे ही कहो ॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो भागीरथी कृतारथ कारणमये नवम कल्लोले वृजभाष्य प्रथम तरंगानुवाद समाप्तम् ॥१॥

॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

॥ द्वितीय तरंग ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ द्वितीय तरंग लिख्यते ॥२॥

श्लोक -- इदमाकण्य त्री, जग्युसे बेचस्ते प्रणम्यता वहशा

तस्यस पिधेमिगम्य प्रोच पापस्य वाक्यमेशति ॥

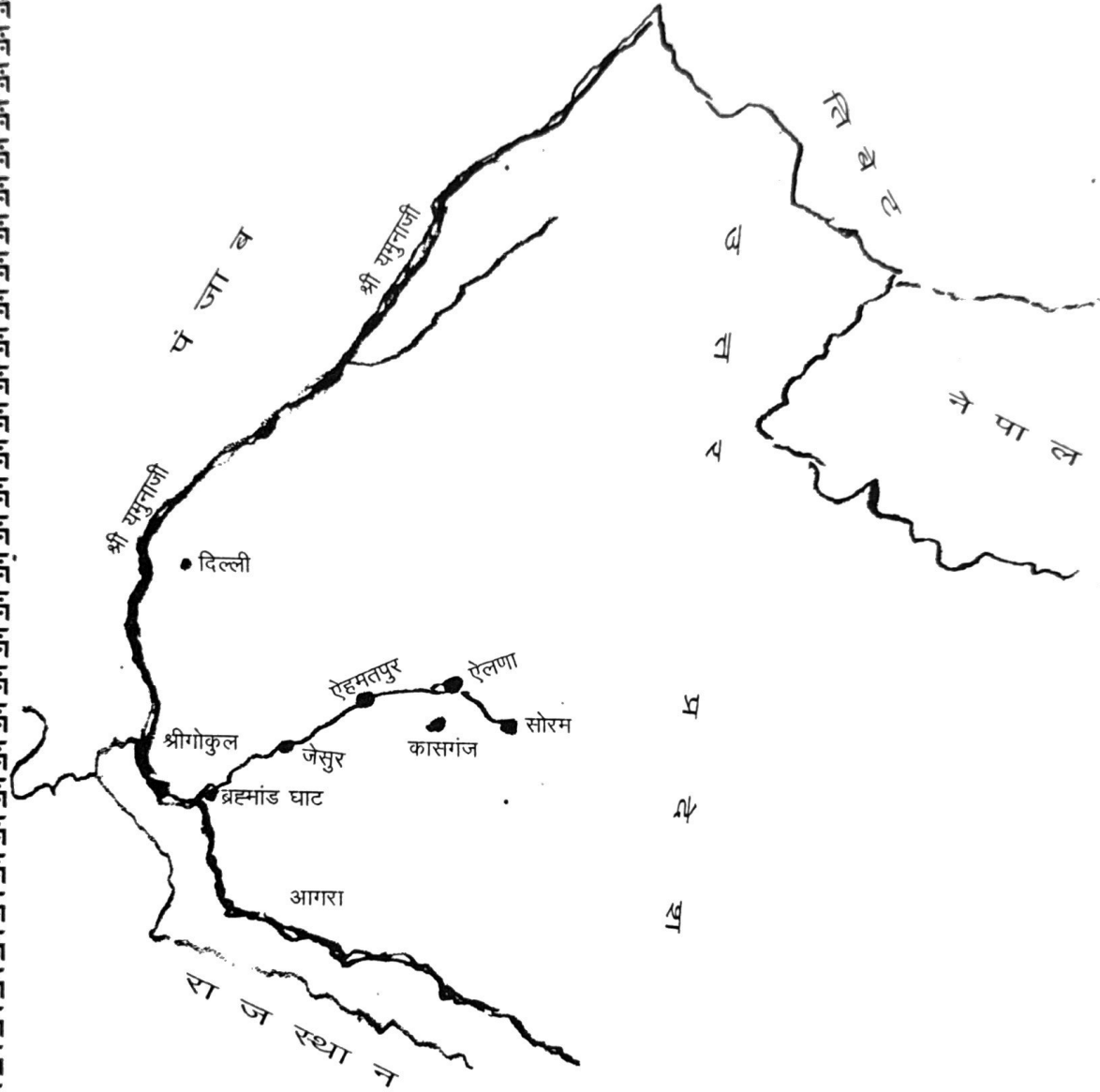
याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के तीन्यो जगत के प्रभु श्रीजी के वचन कूं सुनिके वे चौधरी आदि महाप्रभुन कूं बोहोत वार प्रणाम करिके वा दुष्ट पापी सन्यासी के पास जायके महाप्रभुन के वचन कूं सुनावते भये हैं । सो दुष्ट कुबुद्धि सन्यासी तो वा वचन कूं सुनिके उदासीन मुख होयके क्रोध समूहन सों अपने दुष्ट लोगन के आगे या प्रकार सूं बकतो भयो है, के

“मलेच्छपति के संग मिलाप होने पर तुम सब देखोगे जो हों करुंगो ।” या दुष्ट सन्यासी के या वचन कूं सुनिके जोतिषी, मथुरा पंड्या, मथुरा सूं आयके महाप्रभुन कूं सुनावतो भयो है, वाकूं सुनिके करुणा सागर श्री महाप्रभुजी मन्द मन्द हंसत ही अपने कृपापात्र भक्त गणन में अमृत के समूहन कूं वर्षा करत आज्ञा करते भये हैं के “देशपति के संग यदि यह मिलेगो तो अपने हृदय अनुकूल कछू करेगो, यदि मिलेगो नहिं तो करेगो कहा ?” परम दया सूं भगवान हू धर्म परायण सुबुद्धि देशपति के संग या अत्यन्त दुष्ट कठोर कूं फेर मिलाप नहीं । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं या ब्रह्मांड घाट में होय रहे, जे जय जय नाद हैं, कि मंगल गीत हैं, दुंदुभी नाद हैं, तथा मणी नूपुर झनकार हैं, कंकण कांची के शब्द हैं, वीणा वेणुं के मधूर ऊँचे नाद हैं, के मुरज आदि के जे मनोहर नाद हैं तथा गोमुख पट्ट के जे शब्द हैं सारंगी फेरी तालन के जे शब्द हैं, स्तुति के जे समूह हैं कि वन्दी चारण के जे शब्द हैं, तथा ब्राह्मण समूहनके जे वेद नाद हैं, घोड़ान के, हाथीन के जे ऊँचे नाद हैं तथा श्री नाथजी के बारंबार आरती सम्बन्धी झालर समूहन के जे झनकार हैं वा वा समय में प्रगट भये जे शंखनाद हैं, वे सगरे ही क्षण क्षण में ही वा दुष्ट सन्यासी के कानों में प्रवेश करिके प्रलय काल सम्बन्धी अग्नि रूप होयके वा दुष्ट सन्यासी के कानों में प्रवेश करिके, प्रलय काल सम्बन्धी अग्नि रूप होय के वा दुष्ट सन्यासी के कानों में प्रवेश करिके वा दुष्ट सन्यासी के मन कूं तथा शरीर कूं अत्यन्त ही जलावते भये हैं, तथा भस्म भाव सूं हू रक्षा करते भये हैं । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के याके अनन्तर श्री गोवर्धननाथजी के श्रीमुख कमल दर्शन के अर्थ अत्यन्त बढ्यो है दुःख सो धारण करिवे योग्य उत्साह जामें, ऐसे सो श्री महाप्रभु जी अपने वियोग सूं बढि रह्यो या श्री गोवर्धननाथजी सों अपने मिलन की अत्यन्त उत्कंठा सूं विचार के जासूं स्वयं तो स्थान में विराजे हैं, वासूं श्री जमुनाजी अपने घाट कूं त्यागके परम चतुरवर श्री महाप्रभुजी गडाया के घाट पर जायके, श्री यमुनाजी कूं वेगि उतरके श्री गोवर्धन पर्वत पर पधारते भये हैं । वा श्री गोवर्धन पर्वत पर पधारके वा श्री गोवर्धननाथजी के सुन्दर चंचल मनोहर नयन कमल और महा मधुर सुन्दर मुखकमल कूं दर्शन करिके तथा अपने कों वा श्री गोवर्धननाथजी के भाव के अनुसार पधार के यथायोग्य सेवादि

कूं करिके अपने डेरा में प्रस्थान करवे की इच्छा करते भये हैं । तब कितनेक भक्तन ने कह्यो के "महाप्रभु सूकर क्षेत्र में श्री आपके निवास को सिद्ध करिवे वारो देशपति को लेख तो अभी तक आयो नहीं है सो श्री आप वहां कूं कैसे प्रस्थान करें हैं, ? अबहू वा पत्र की वाट देखनी उचित है ।" यह सुनिके भगवान श्री महाप्रभुजी हंसत हंसत ही विनके प्रति आज्ञा करते भये हैं, के "वाकी प्रतिक्षा करिवे सूं हमकूं कहा है, हमकूं प्रस्थान करवो आवश्यक है", और या अवसर में व्रत करिवे वारेन में श्रेष्ठ जो प्रभुन को शुद्ध हृदय मित्र भक्त रामरतन है, सो प्रीतम के वियोग सूं डरत ही प्रभुन के आगे विज्ञापना करत भयो है, के "हम वहां ठहेर रहे हैं हमारे प्राणनाथ आप तो ब्रज कूं छांड़ि के प्रस्थान करि रहे हैं, तासूं हम कहा करें ?" अब प्रिय श्रीजी स्पष्ट आज्ञा करते भये हैं, "कि तुम कबहू मत डरो, यह ब्रज हमकूं नहीं छांड़े है, न हम ब्रज कूं छांड़ें हैं, या ब्रज के हम आश्रय हैं ब्रज में हमारो सदा निवास है" और अगहन मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि में गुरुवार श्रीनाथ जी के राजभोग पर्यन्त सेवा कूं करिके अपने सगरे सगे सम्बन्धी वैष्णव भक्तन के संग भोजन कूं करिके महाप्रभुजी विजय नगारान के शब्द कूं सुनत ही ब्रह्मांड घाट सूं प्रस्थान करते भये हैं, सोख गाम में निवास करते भये हैं । यहाँ चार घड़ी रात्रि के शेष में सुन्दरवर श्रीजी अभ्यंग आदि कूं करिके स्नान करिके प्रहर मात्र दिन सूं श्रीनाथजी के राजभोग पर्यन्त सेवा कूं सिद्ध करिके वहां सूं वेग ही प्रस्थान करते भये हैं, आगे छुवार गाम में तलाब के तट पर श्री महाप्रभुजी विराजमान होते भये हैं । तहां विराजमान विश्व सों वंदित श्री महाप्रभुन के आगे वा गाम के वासी तथा आयरा गाम के वासी के वैसे अन्य गाम के वासी जन हू आयके आदर पूर्वक प्रणाम करते भये हैं, सो कृपासागर श्री महाप्रभुजी विन सबन कूं प्रसाद वस्त्रादि सूं कि अमृत के समुद्रन कूं रक्षा करिवे वारे वचनन सूं विनको समाधान करिके तृतीया तिथि में प्रथम जैसे प्रस्थान करिके प्रिय श्रीजी अकबराबाद गाम में सुखपूर्वक निवास करते भये हैं । यहां चन्दूवाल गाम के तलाब के निकट अपने डेरा में विराजमान गुणसागर महाप्रभुन के आगे गंभीरा गाम निवासी प्रसिद्ध अत्यन्त बली जो आलम राय है सो बहोत सम्बन्धीन के संग ही प्रेम, नम्रता सहित आपको प्रणाम करतो भयो है ॥ वा

आलमराय की कोऊ प्रिया एक मलेच्छ वैश्या हती सो वाके संग ही आवती भई है, सो ढोलक कूं बजावत ही मधुर गान कूं करती भई है, श्री महाप्रभुजी याके गान सूं अत्यन्त प्रसन्न होते भये हैं, और अत्यन्त सराहना कूं करते भये हैं, और कृपासागर श्रीजी याके घर जाने लिये आज्ञा हू करते भये हैं । तब सो आलमराय वा वेश्या के संग ही निर्लज होयके घोड़ा पर सवार होयके घर जातो भयो है, ये देखिके श्री महाप्रभुजी दोष नहीं विचारते भये हैं, अत्यन्त प्रसन्न होते भये हैं और अपने कृपापात्रन के आगे कहते भये हैं के "ऐसो बड़ो आदमी होयके हू ऐसे करत कछू नहीं लजावे है, तो यासों पीछे आश्चर्य कहा है ।" याके अनन्तर प्रिय श्रीजी पंचमी तिथि में अकबरावाद कूं प्रस्थान करते भये हैं, तामें मार्ग के गाम साहगढ़ के निकट जब प्राप्त भये हैं, तब मूर्ख लोक महाप्रभुन की भारी चतुरंगिनी सेना कूं देखिके वेगि ही दौड़ जाते भये हैं, विनमें कितनेक हू मूर्ख तो गोली बन्दूक लेकर प्रथम तो युद्ध करिवे लिये उद्यम वारे होते भये हैं । प्रभुन के कृपापात्र वैष्णवन के मुख सों पुरुषोत्तमों के मुकटमणि, महाप्रभुन कूं जानके पीछे तो या महाप्रभुन के शरण कूं ही प्राप्त होते भये हैं, जे दौड़ गये हते वे हू श्री महाप्रभुन के शरण आवते भये हैं, विनमें हू आलमराय के भैया कूं पुत्र जो भाग्यवारो वीरभद्र है, सो महाप्रभुन के निकट आयके ब्रह्मादिकन कूं दुर्लभ है रज जिनकी, ऐसे मनोहर चरणन कूं प्रणाम करतो भयो है, और अनुग्रह विशेष सूं महाप्रभुन कूं वा वा पूछे । सो बुद्धिमान वीरभद्र हू वा महाप्रभुन में प्रेम नम्रता प्रकाशमान होवत ही भली प्रकार वा वा विज्ञापना कूं करतो भयो है । या गाम के निकट जो दीवडी नाम गाम है, वहां की रहवे वारी एक स्त्री प्रभुन के आगे बारंबार ही "हों विधवा हूं मोकूं कछू दीजिये" ऐसे कहेत ही याचना करिवे कूं आई है । भगवान रसिक शिरोमणि श्री महाप्रभुजी श्रीजी, मंद मंद हंसत ही "कहां तुम विधवा के प्रति पति बांटके देवूं हूं ।" ये कहेत मधुर सुन्दर हांसी कूं करते भये हैं यह सुनके सगरे भक्त वन्धु स्वजन वैसे मृगनयनी सगरे लोक तहां सो भिक्षा मांगिवे वारी हू हर्ष के समुद्र में डूब जाते भये हैं । याके मनोरथ सो अधिक वाके प्रति दान करिके महाप्रभुजी कालिन्द्री सों उतरके गंधेरी गाम की सीमा में विराज रहे हते । तब प्रभुन के भरे भये गिरे तेल के पात्र सूं चमेली को तेल बिखर जातो भयो

श्री कल्लोलजी नवम् तरंग १ से ३



संवत् १६७७ कार्तिक सुद - ५ से मागसर सुद - ५

श्री महाप्रभु गोकुलेशजी ने श्री गोकुल से सोरम तक कीये हुए
प्रवास ॥ तिलक और मालोद्धार की लिये श्री गोकुल (आदिभौतिक)
छोड़कर श्री गंगाजी की आरत को श्री यमुनाजी की विनती से
परिपूर्ण की ॥

है, सो दशों ही दिश कूं सुगंधित कर देतो भयो है, वाकी सुगंधि सूं खिंचे भये भौंरा जैसे ही अहं पूर्विका सों ही वहां के लाखन लोग ही वहां आय जाते भये हैं । यह कैसी सुगंधि वारो या महाप्रभुन को तेल है, ऐसे कहे रहे विन लोकन को देखिके श्री महाप्रभुजी मधुर प्रकार सों ही देखते भये हैं ॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो भागीरथी कृतारथ कारणमये नवम कल्लोले वृजभाष्य द्वितीयं तरंगानुवाद समाप्तम् ॥२॥

॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

॥ तृतीय तरंग ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ तृतीय तरंग लिख्यते ॥३॥

श्लोक -- अथ संप्राप्य संग्राम ढोलणां मधिभावसत् ।

भुक्तायांयथ षष्टांसयांम मात्रे दिने गते ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के याके अनन्तर ढोलणां नाम गाम में प्राप्त होयके यहां निवास करते भये हैं ॥ याके अनन्तर अगेहन मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी के दिन प्रहर दिन चढ़े पर श्री महाप्रभुजी सूकर क्षेत्र कूं अपने स्वरूप सों शोभायमान करते भये हैं । तब सो सो श्री गंगाजी और वह सो सो वाराहदेव तथा वहां के सगरे जन के सगरी पूर्ण चन्द्रवदनी हू रोम हर्ष वारी होती भई हैं, के हर्ष के समुद्रन में निमग्न होय जाती भई हैं, और निवास योग स्थल की परिक्षा के अर्थ सुन्दरवर जगदीश्वर श्री महाप्रभुजी घोड़ा पर सवार होयके अनन्त भक्तन के संग भ्रमत वृक्षन सूं मिले एक स्थल कूं देखिके श्रीजी प्रसन्न होते भये हैं । तब ही वा स्थल में श्री महाप्रभुन की अपनी आधिदैविक गोकुल हू प्रवेश कर जाती भई है ॥ वहां श्री गंगाजी के अत्यन्त ऊंचे तट कूं देखिके "सुगम मार्ग बनाय देवो ।" ऐसी श्री आपकी आज्ञा सूं उद्यम वारे भये अनन्त भक्त सेवक ही वैसे ही वेग ही कर देते भये हैं । विनकी शीघ्रकारी भाव कूं देखिके श्री महाप्रभुजी बहोत प्रसन्न होते भये हैं । श्रीमान सो देश ततक्षण ही महानगर भाव कूं प्राप्त होय जातो भयो है, के प्राणनाथ की इच्छा सूं तब ही गोकुल गाम कूं प्राप्त होय जातो भयो है, और

अपने योधान के संग तथा चौधरी जिमीदारन के संग आप श्री प्रभुन के आगे प्रणाम करतो भयो है और वहां ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, तथा पुरोहित, सगरे विरक्त सन्यासी, ब्रह्मचारी तथा सगरी स्त्री जन हू वा महाप्रभुन के स्वाभाविक मंद हास्य सूं सुन्दर श्रीमुख कमल के दर्शन करिके वेग ही कृत्य कृत्य होय जाते भये हैं । तथा प्रगट भई वात्सल्यता सूं प्रेरणा किये भये सो कहते हू भये हैं, "हे महाप्रभु ! सगरी सम्पदा के सहित श्री आप इहां कैसे निवास करेंगे ? यहां तो सुरकी ऐसे नाम वारे के गुराहर नाम वारे दुष्ट चोरी में तत्पर असंक्ष ही चोर रहें हैं ॥ सो शस्त्रन कूं धारण करें हैं, बड़े वल वारे हैं, सगरे उपद्रव करें हैं, सदैव ही सबकूं कष्ट देते भये हैं, सबन को सब कछू लूट लेवे हैं ।" यह सुनिके विनकूं श्री महाप्रभुजी आज्ञा करते भये हैं, "वे मलेच्छ तो नहीं हैं, हम तो मलेच्छन सूं हू नहीं डरें हैं, वे हमारो कहा करेंगे ? अपने जनन की रक्षा तो सदैव करिवे वारे प्रभु जागें ही हैं । यासूं हमकूं अणुमात्र हू डर नहीं है । याके अनन्तर भगवान श्रीजी आप सगरे स्वजनन के संग वा भूमि कूं चरणन सूं पावन करत अपने दर्शन दान सूं श्री गंगाजी के नयनन कूं बिना यत्न के ही कृत्य कृत्य कर देते भये हैं, और या महाप्रभुन के श्रीहस्त पल्लव तथा चरण कमल के परम सुन्दर श्रीअंग समूह के स्पर्श कूं प्राप्त होयके श्रीगंगाजी हू सर्वोपर विराजमान भाव कूं प्राप्त होय जाती भई हैं । श्री गंगाजी के सर्व धर्मनके रक्षक परात्पर परमेश्वर श्रीजी शास्त्र अनुसार ही सगरे स्नान दानादि धर्म कूं करते भये हैं और श्रीनाथजी के मन्दिर में पधारके सब सयन आरती पर्यन्त सगरी योग्य सेवा कूं करिके, श्री महाप्रभुजी सुखपूर्वक शयन कूं करते भये हैं, और चार घड़ी रात्रि रहे ब्रह्म मुहूरत में उठिके आवश्यक कृत्य श्री गंगा स्नानादि सगरो कार्य करिके और श्री गिरधारीजी के मन्दिर में प्रवेश करिके मंगल आरती आदि करते भये हैं । याके अनन्तर बाहिर पधारे या कृपासिंधो ईश्वर श्रीजी कूं कृष्ण पारेख तथा नाथभाई तथा वाको पुत्र हरि भाई, रतनजी, लिवजी, सिंधजी, केशवदास, मोटा भाई, सोमजी, वाहाला, कहानदास, भक्तिवारे गुणसागर वैसे और हू करोड़न सूं अधिक भक्तजन, चारों ओर ही वेष्टन करि लेते भये हैं, तथा प्रेम वारे के मंगल की अभिलाखा वारे स्त्री, के पुरुष हू तब अनेक प्रकार के मंगलमय गीतन को गान करत ही हमारे

कल्लोलजी नवमो

१२

प्रभु प्राणनाथ को जन्मोत्सव है, तासूं आज हमारे धन्य भाग्य हैं, ऐसे हर्ष सूं सगरे लोकन में न समावत ही रंगवल्ली सूं विचित्र वेदी में सुन्दर आसन कूं धारण करिके यहां प्रिय श्रीजी कूं पधरायके स्वयं हर्ष के समूह में निमग्न होवत ही प्रेम सूं सुगंधी फुलेल सूं अभ्यंग कूं करते भये हैं । वहां प्राप्त भयो है हर्ष जिनमें ऐसी चन्द्रमुखीन की तथा भक्तन के जे मंगलमय गान हैं सो चारों ओर ही तीन्यो लोकन में प्राप्त होय जातो भयो है । और चन्दन, अगर, कपूर, कस्तूरी, कुंमकुंम सूं मिले भये उबटना कूं लेकर भक्तजन वा श्रीजी के अंगन में उबटना करते भये हैं । याके अनन्तर सो भाग्यवारे भक्तजन नाना प्रकार के रत्न मुक्तान सूं जटित सुवर्ण सूं के चौकी कों प्रेम सूं लावते भये हैं ॥ तथा वे भक्तजन प्रेमसूं सुगंधित सुहातो तातो बोहोत जल कों शुभ पात्रन सूं भरि भरि के हर्षपूर्वक यहां ले आवते भये हैं । और अनेक प्रकार के भाव सूं यह सुन्दरीगण चारों ओर सों गान करि रही हैं, और गोमुख, शहनाई के संग दुंदुभी आदि बाजे बज रहे हैं, सूत, मागद, विप्र, चारण यथायोग्य ही बंदीजन हू प्रभुन के गुण समूहन सूं स्तुति करते भये हैं । प्रेम सूं भक्तजन प्रभुन के मंगल स्नान को दर्शन करिवे लिये प्रभुन के निकट स्थल कूं ग्रहण करिके ठहेर रहे हैं ॥ और या प्रिय के श्रीमुख कमल को दर्शन करिवे लिये स्त्रीजन हू प्रेम सों अहं पूर्वक ही दौड़ रही हैं ॥ तब ये भक्तजन रत्न जटित चौकी पर प्रिय महाप्रभुन कूं पधरावते भये हैं ॥ तब प्रियवर के दर्शन की अभिलाखा वारे स्त्रीय पुरुषन को बड़ो ही समृद्ध होतो भयो है । त्याहां डारे भये तिल हू भूमि कूं स्पर्श करिवे में अवकाश कूं नहीं पावें हैं । प्रसर रही है सुगंधी विशेष जाकी, ऐसे बोहोत सघन कुमकुम के रस कूं प्रियवर के अंगन में लगायके कोमल हाथन सूं कोमल कोमल मर्दन करती भई हैं, के सिर में हू कुमकुम डारके वैसे मनोहर बालन कूं मर्दन करिके प्रभुन कूं स्नान करावते वे भक्तजन स्वयं रससागर में स्नान करते भये हैं । याके अनन्तर ऐसे मंगल स्नान कूं करि रहे महाप्रभुन के चरण कमल सम्बन्धी अमृत कूं ग्रहण करिवे लिये आय रहे जे स्त्रीजन के पुरुष हैं वे ले ले के जाय रहे जे वे हैं विनको भारी कोलाहल होय रह्यो है सो तीनों ही जगत में व्याप्त होय जातो भयो है । स्नान किये श्री महाप्रभुन के मनोहर श्वेत वस्त्रन सों पोंछ्यो जो श्री अंग है सो जासों याकूं धारण करतो भयो है, वाकों महा भगवदीयन की दृष्टि हू पान कर रही, याके

अनन्तर जा स्थल में बड़े हर्ष सों मृगनयनी जनन ने रचना करी वे नाना प्रकार की रंग की वेल शोभायमान हती, वा स्थल में कोमल बिछोनान सों रत्न जटित पीठ पै विराजमान होयके जगदीश्वर श्री महाप्रभुजी प्रसिद्ध मारकंडे आदि अष्ट चिरंजीवीन के पूजन कूं आदर करते भये हैं । तब वे महाभाग्य वारी, भक्ति वारी, प्रियागण कुंमकुंम सुगंधि सूं या महाप्रभुन के मस्तक में के श्री भाल में मंगल तिलक कूं करती भई हैं और श्रीमद् गोकुल प्रभुन कों अक्षतन सों ही पूजन करती भई हैं । और तांबूलन सों के हजारन रत्न जटित सुवर्ण की थारी में धारण किये कपूर बातीन की आरतीन सूं हू पूजन करती भई हैं । याके अनन्तर ईश्वरेश्वर श्री महाप्रभुजी श्रीनाथजी के मन्दिर में प्रवेश करिके राजभोग आरती पर्यन्त सेवा कूं करिके सगे सम्बन्धी सगरे ज्ञाति वारेन के संग ही, के सहित ही भोजन करिवे लिये, भोजन मन्दिर में पधारके विराजमान होते भये हैं । वहां महाप्रभुन के करोड़न सूं हू अधिक स्त्री पुरुष भक्त आवते भये हैं । वे सगरे श्री महाप्रभुन की आज्ञा सूं अपने अपने योग्य स्थल में बैठ जाते भये हैं । वहां श्री महाप्रभु विनके संग मिलके श्री गोकुल में जैसे, ही वैसे ही भोजन करते भये हैं । याके अनन्तर श्री महाप्रभुजी श्री मुखकमल, हस्तकमल, के चरण कमल कूं पखार के सभा में भक्तजनन सूं रचना किये मनोहर आसन कूं शोभायमान करते भये हैं । तब प्रियतम के मनोहर विशाल सभा घर में परम आनन्द सूं पूर्ण, सगरे भक्त ही आवते भये हैं । वहां बड़े तकिया सूं मनोहर इन्द्र गोप जैसे लाल रंग वारे अत्यन्त सुन्दर तूल के आसन पर कि सुन्दर गादी पर विराजमान होते भये हैं सुन्दरवर प्रिय श्रीजी कूं भली प्रकार दर्शन करिके हर्ष के सागर में ही वे भक्तजन निमग्न होय जाते भये हैं । आज उत्सव है या विचार सूं प्रेमपूर्वक सगरे सेवक महाप्रभुन के वा वा अंगन में अनेक प्रकार के उपायन सूं सुन्दर जामा, पाग, कमर पटुका आदि कूं पहेरावते भये हैं, और वे श्रीजी के जे अंग, उत्सव सूं ही आनन्दित होयके, प्रफुल्लित होयके वा पाग, उपरना आदि कूं पहेरके अत्यन्त शोभायमान होते भये हैं । तथा पाग, उपरेना आदि कूं पहेरिके श्रीजीकूं हू आनन्दित करते भये हैं, और वहां एक सेवक वैष्णव ने भेंट किये जे वस्त्र, सुवर्ण के हार विचित्र भूषण तथा कुंमकुंम पदक कुंडल, चादर, पट, चरण पादुका पनही तथा और हू जे जे वस्तु हैं विनके न्यारे न्यारे परवत ही देखे हैं । वहां सुन्दरीजन करोड़न चन्द्रमा कूं विजय

करिवे वारे प्राणनाथ के श्रीमुख को दर्शन करिके हर्ष के समूहन में हू डूब जाती भई हैं । और भक्तजन बरास सहित उत्तम बीड़ी संवारके श्रीजी कूं आरोगवाय रहे हैं, तामें आरोग रहे या श्रीजी के मुख में अत्यन्त शोभा बढ़ती भई है । और सुन्दरीन कूं तो वा श्रीमुख के चुंबन की इच्छा ही बढ़ती भई है, और पीकदान में परी वा प्रिय की प्रसादी बीरी कूं जे जन प्राप्त भये हैं विनकी भक्ति मुक्ति में हू अरुचि ही होय जाती भई है । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के प्रागट के केशरी धोती उपरेना कूं पहेरिके कानों में हीरा मोती रत्नजटित सुवर्ण के सुन्दर कुण्डलन कूं धारण करि रहे, के सेवकन सों चारों ओर मिलके लक्ष्मी कूं विजय करिवे वारी है अंगन की शोभा जाकी, ऐसी सुन्दर भ्रुअ वारी सुन्दरीन के गुणन सों चारों ओर मिलिके और सुन्दर तूल के तकिया वारी ऊंची गादी कूं अपने स्वरूप सों शोभायमान करि रहे जे उछल्लित शोभा वारे सुन्दरवर श्री गोकुलेश हैं, सो तुम सगरे श्रोतान कों पालन करें ॥१॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो भागीरथी कृतारथ कारणमये नवम कल्लोले वृजभाष्य तृतीय तरंगानुवाद समाप्तम् ॥३॥

॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

॥ चतुर्थ तरंग ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चतुर्थ तरंग लिख्यते ॥४॥

श्लोक -- द्वषमकश्चि चौरेणां गत्य के न चित ।

रात्रौ गृहीत स्त घुघलो

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के कबहू कोउ चोर आयके रात्रि समय में प्रभुन के एक कोउ बैल कूं ले जातो भयो है तब यह सुनके सब लोकन ने बड़ो हल्ला कियो । श्री महाप्रभुन के सगरे पोहोरुआ हू वाके पीछे दौड़ते भये हैं, परन्तु वा चोर कूं पकरवे में समर्थ न होते भये हैं । सो चोर तो घर जातो भयो है वा ही क्षण में वाको पुत्र मर जातो भयो है । लोकन ने तब कह्यो के तुमने श्री गोकुलेश प्रभुन को बैल चोर्यो हतो, वहां ही बांधतो भयो है, और छिपके ही चल्यो जातो भयो है सो वाही दिन सों सगरे हू चोर

प्रभुन के डेरा में चोरी करनो ही अत्यन्त त्याग कर देते भये हैं । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, के अगहन मास की शुक्ल दशमी के दिन अपने चरण कमल के धारण सों वहां की षष्ठी तिथि को पावन करते भये हैं । सगरे धर्मन के पालक श्रीजी एकादशी में पंच तिथि को पावन करि रहे हैं याके अनन्तर वाराह देव कूं प्रणाम करिके, के वहां के वाराहदेव की महिमा कूं बढ़ायके फेर अपने घर में पधारते भये हैं । वामें हू महाप्रभुन के दर्शन अर्थ करोड़न ही उत्तम लोक आय रहे हैं । तथा वा महाप्रभुन के दर्शन कूं करिके जाय रहे हैं । श्री महाप्रभुजी तो भोजन कूं करिकें अपनी निज बैठकजी में विश्राम करि रहे हैं । तब फेर हू महाप्रभुन के दर्शन अर्थ अनन्त लोक ही आय रहे हैं । निवारण किये हू जब वे जन महाप्रभुन के दर्शन विना नहीं जावें हैं, तब श्रीनाथजी के जानी भीतरिया कूं दिखायकें विनको मिथ्या ही वे कहते भये हैं, "यह श्री गोकुलेशजी हैं ।" देखो देखो और वे लोक वैसे तेज सों रहित वा जानी भीतरिया कूं महाप्रभु नहीं मानते भये हैं । विश्राम करिके जागे, उठके विराजमान भये श्री महाप्रभुन के दर्शन कूं करिके तथा चरणन में प्रणाम करिके वा महाप्रभुन की कृपादृष्टि कूं पायके कृत्य कृत्य होयके घर में चले जाते भये हैं । और या सोरम के अधिकारी के पास जो वा पाखण्डी कुबुद्धि राक्षस सन्यासी ने, जो या प्रकार के पत्र पढाये हते के "श्री गोकुलनाथजी के सगरे लोकन में, तुमारे वाणीया अन्नादि को मति बेचें ।" सो या पत्र के अनुसार सों अधिकारी वहां के वाणीयान सूं कहेतो भयो है "के गोकुलपति के लोकन में अणुमात्र हू अन्न नहिं बेचनो, जो बेचोगे तो राजदण्ड कूं भोगोगे ।" यह सुनिकें महाप्रभुन के लोग विशेष चिन्ता करिवे लगे, के अब हम सब कहा करेंगे, यह देखिके उद्यम नाम वाणीया प्राण प्रभुन के आगे विज्ञापना करत भयो है के "जाकों जो चाहियेगो वाको रात्रि में हम सब पोंहोचाय देवेंगे ।" ऐसे कहिकर सो वैसो ही करतो भयो है, और या सोरम को अधिकारी हू हतो सो दुर्बुद्धि वा दुष्ट सन्यासी के वचन सों महाप्रभुन के आगे आयके कहेतो भयो है के "आप यहां मति बिराजो ।" तब श्री महाप्रभुजी आज्ञा करते भये हैं, "हम देशपति के कहिवे सूं यहां बिराजे हैं, सो तिहारे, के वा सन्यासी के वचन सूं, या स्थान सूं और ठौर में चले जायगे का ? हम कबहू नहीं जायेंगे ।" या प्रकार के वचन सों विनको निरादर करते भये हैं । या अवसर में ही अनन्तदास जो प्रभुन के आगे, दास, सेवकन

के सहित ही श्री गोकुलाधीशजी सुख सों ही सोरम में विराजे या अर्थ वारो सो पत्र काशमीर सों लायके श्री महाप्रभुन कों दिखावतो भयो है, सो पत्र हू वा सोरम के अधिकारी के सामने आयके, वाके निरादर कूं करतो भयो है, तथा लश्करखान के दोय घोड़ा सवार तथा पत्र हू आयके या सोरम के अधिकारी कूं मृत्यु तुल्य निरादर करते भये हैं । तब सो अधिकारी महाप्रभुन के चरणन में गिरिके अपने अपराधन कूं क्षमा करावतो भयो है । करुणासागर श्री महाप्रभुजी बिना यत्न के ही वेग ही याके अपराधन कूं क्षमा करते भये हैं । तब सगरे वाणीया, के और सगरे लोक राजनीति सूं के महाप्रभुन सूं विशेष नाम सूं बड़े हर्ष पूर्वक अन्य सगरेन कूं तृण जैसे मानत ही यहां आयके स्वतह ही व्यापार कूं करते भये हैं, और मिरजापुर में रहिवे वारो प्रहलाद गुराह सुरकी जाति में प्रसिद्ध सो बलवारो, अर्जुनपुर में ठहेरवे वारे मोहन राय हे सो यह दोनों ही महाप्रभुन की शरण में आयके, श्री महाप्रभुन के श्री मुख सों भगवद् नाम को श्रवण करिके अत्यन्त दास होय जाते भये हैं । भक्ति सूं, प्रेम सों, आदर पूर्वक घास तथा काष्टादि की सेवा कों अंगीकार करते भये हैं, के गाड़ीन की गाड़ी भराय भराय के पठावत हे, और अगहन मास की पून्यो में चन्द्र ग्रहण हतो, तब श्री महाप्रभुजी गंगाजी में विधि अनुसार ही ध्यान दानादि कूं करते भये हैं, दान सूं वहां के सगरे ब्राह्मणन कूं सगरे दरिद्रीन कूं के दरिद्र कूं लोप कर देते भये हैं । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के सदैव ही जब श्री महाप्रभुजी गंगाजी में ध्यान दानादि कूं करते हते, तब गंगा स्नान ऐसो कहिवो ही चाहिये, तामें कालिन्दी स्नान ऐसे आपके श्री मुखारविन्द सों श्री यमुना में स्नान करूं हूं ये जो सदैव अभ्यास वारो वाक्य प्रगट होतो हतो । सो सगरे भक्तन कूं सुखदान करतो भयो है, तथा श्री महाप्रभुन के प्रेम सूं आकर्षण करी और वहां ही एकान्त में पधार रही ही श्री जमनाजी कूं हू सूचना करत भयो है । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, के पौस मास की कृष्णा द्वितीया में लीला में पोहोंचे गिरधरजी कूं दोय तीन दिनके पीछे श्री महाप्रभुजी सुनिके सगे सम्बन्धीन के सहित ही श्री गंगाजी में स्नान कूं करत भये है, तथा वेद, शास्त्रोक्त सगरे उचित कर्मन कूं हू करते भये हैं, और बहूजी के संग ही श्री गोकुल में हू पधारते भये हैं । वहां गिरधरजी की बड़ी बहू भामिनी बहूजी कूं हू धीरज देते भये हैं, तथा स्नान सों श्री यमुनाजी को हू अत्यन्त आनन्दित करते भये हैं,

और पुष्पावती बाई के घर में भोजन करते भये हैं तथा पौढ़ते भये हैं ॥ सत्य प्रतिज्ञा वारे प्रिय श्रीजी अपने घर में नहीं पधारते भये हैं, और श्री महाप्रभुजी वहाँ सूं गोवर्धन गिरिराज पधारके अपने श्रीमुख को दर्शन करायके श्री गोवर्द्धनधारी के नयनन कूं अत्यन्त शीतल करत सुखी करत कितनेक दिन श्री महाप्रभुजी वहाँ विराजते भये हैं । तब महाप्रभुनके भक्त प्रिय साया गढवै वैसे वैसे अत्यन्त सेवन करतो भयो है । वा पर श्री महाप्रभुजी अत्यन्त प्रसन्न होते भये हैं । याके अनन्तर श्री महाप्रभुजी श्री गोवर्धननाथजी सों आज्ञा लेकर सोरम में पधार कर अपने भक्तन कूं सुखदान करते भये हैं । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के वहाँ श्रीनाथजी के मन्दिर को समराय हते, सो बिहारी नाम जो कवि है सो "काल ही गोकुल फेरि बसेंगे" या प्रकार सूं सुन्दर भाषा पद कों बनायके सुनावतो भयो है । वा पर ईश्वरेश्वर श्री महाप्रभुजी अपने उपरेना कूं तथा अत्यन्त उत्कृष्ट मतिवारे मन समान वेग वारे सुन्दर कुलीन घोड़ा कूं देते भये हैं ॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो भागीरथी कृतारथ कारणमये नवम कल्लोले वृजभाष्य चतुर्थ तरंगानुवाद समाप्तम् ॥४॥

॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

॥ पंचम तरंग ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ पंचम तरंग लिख्यते ॥५॥

श्लोक --

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के "याके अनन्तर मछी भवन सूं फिरके आयो जो यवनेश्वर देशपति है, सो काशमीर में महाप्रभुन के चरण कमल सम्बन्धी रजन सूं अत्यन्त पवित्र हू अपने उत्तम घर में कछुक काल निवास करतो भयो है, सो संभावना कियो है महाप्रभुन को दरशन जामें ऐसे अपने आगरा नगर को उद्देश करिके सो श्रेष्ठ बुद्धि वारो देशपति चलतो भयो है ॥ वहाँ मार्ग में बुढ़िया सहारनपुर के पास वर्तमान वा देशपति के उदर में प्राणन कूं वाधा करिवे वारो दुःख, न सहेन योग्य शूल होतो भयो है तब

१८
 कल्लोलजी नवमो
 ब्राह्मणन के प्रति देवे लिये उत्तम स्वर्ण को संकल्प करिके सारंगदेव के हाथ
 सूं सुवर्ण देवे के प्रति मथुरा पठावतो भयो है, और याकी प्रिया अत्यन्त बुद्धिवारी
 नूरमोहोल तो यह कहती भई है, के श्री गोकुलेश प्रभुन को श्री गोकुल छुड़ायेके
 जो तुमने सोरम में निवास करायो है सो तिहारो भारी अपराध या प्रकार फल
 कूं दे रह्यो है, वासूं ही सगरे दुःख के हरिवे वारे शुभ वा श्री गोकुलेश प्रभुन
 के ही चरणकमल को तुम स्मरण करो, ताते तुम वेग ही अत्यन्त सुख कूं
 प्राप्त होय जावोगे ।" ऐसे वा नूरमोहोल के वचन कूं सुनिकें महाप्रभुन को
 सो स्मरण करतो भयो है, तासूं तत्क्षण ही वेग ही अत्यन्त दुर्लभ सुख कूं
 प्राप्त होय जातो भयो है । और मथुरा में तो ब्राह्मणों के लिय आयो जो उत्तम
 सुवर्ण है वाकूं सारंगदेव के हाथ सूं लेकर सो दुष्ट सन्यासी अपने पास ही
 राख लेतो भयो है, वाकूं सुनिकें दुर्बुद्धि सन्यासी ने सुवर्ण को स्पर्श कियो है,
 सन्यासी कों तो सुवर्ण को स्पर्श ही निषेध है, पाप है या प्रकार कहेत सो
 देशपति बड़ो क्रोध करतो भयो है, और वाकी सो प्रिया नूरमोहोल हू वा सन्यासी
 पर अत्यन्त क्रोध करती भई है । याके अनन्तर आगे चलत सो देशपति दिल्ली
 में आय प्राप्त भयो है, यहाँ हू अपने दासन के संग ही स्वजातीय विरक्त मुनि
 बड़ो पुरुष कोऊ ताके पास मलेच्छ राजा मिलवे कूं गयो, वहां जायके आगे
 प्रणाम करिके ठेहेर्यो, और पूछतो भयो है के आप बड़े बुद्धिमान हैं मेरे प्रत्यक्ष
 दोष कूं आप निर्भय होयके कहें जाकूं सुनिकें हों सदैव सों सुखी होवूं, यह
 सुनिके सो विरक्त कहेतो भयो है "के मलेच्छ प्रभो तुमने बड़ो अपराध कियो
 है, जो पाखंडी अत्यन्त ही दुष्ट, खल, कठोर, रागद्वेष, परायण, शठ, नीच,
 पापी, दुराचारी के धर्म के नाश में उद्यम वारे, के लाभ, पूजा, प्रसिद्धि के लोभी,
 मूर्ख के संगी वा दुष्ट सन्यासी के पीछे चलो हो, धन धान्य सम्पदा संयुक्त
 स्वधर्म में सदा स्थिर तथा राग द्वेष सूं विमुख सत्पुरुष सत्य प्रतिज्ञा वारो के,
 विश्व के हेतु में तत्पर, के ऊंचे आशय वारे, के कृपा सूं, सदा पाप सूं रहित,
 मंगल चेष्टा वारे, कि मिथ्यावाद सूं निवृत, मंद हास्य पूर्वक बोलवे वारे ऐसे
 श्री गोकुलेश प्रभु को तुमने अपनो स्थान श्री गोकुल को त्याग करायो है, सो
 वा दुर्बुद्धि सन्यासी के क्रोध सूं तुमकूं कहा होयगो ? के हर्ष सूं तुमकूं कहा
 होयगो ? और यह श्री गोकुलेश प्रभुन के क्रोध सूं तो तुम पुत्र स्वजन सगरे
 सेवकन के सहित ही दग्ध होय जावोगे, और यह श्री गोकुलेश महाप्रभु यदि

प्रसन्न होय जाय तो ऐसो को पदारथ है, जो लाभ नहीं होय ? अपितु सर्व मनोरथ पूरण होय हैं, यह श्री महाप्रभुजी सर्व समर्थ हू हैं, तो हू कोऊ कूं श्राप हू नहीं देवें हैं, यह तो कृपासिंधु हैं, अत्यन्त प्रसन्न ही होय हैं, मूल में विश्व के मंगल अर्थ ही इनको अवतार है । यह श्री महाप्रभुजी अपराधी कूं हू कोऊ कूं दुःख नहीं देवें हैं ।" यह सुनिके सो मलेच्छपति कहतो भयो है, के "या दुष्ट सन्यासीकी माया सूं सम्मोहित तासूं दिन रात्र ही डर रहे, के वाके कहे कूं श्रेष्ठ धर्म जानके, तासूं वा महाप्रभुन में कर्म, मन, वाणी सूं अपराध करि रहे, मो अल्प बुद्धि वारे ने बड़ो ही बुरो काम कियो है, सो स्वतन्त्र प्रभु वे श्री महाप्रभुजी यदि मेरे जैसे अपराधी को दर्शन देवेंगे, तो करुणा समूह प्रभुन कूं चरणन में प्रणाम करिके कहंगो ।" ऐसे कहिकर सो मलेच्छपति वा महात्मा सूं विदा होयके बड़े भमरन वारे अगाध्य, अपार पश्चाताप समुद्र में डूबत ही अपने डेरा में जातो भयो है ॥१॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो भागीरथी कृतारथ कारणमये नवम कल्लोले वृजभाष्य पंचम तरंगानुवाद समाप्तम् ॥५॥

॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

॥ षष्ठम तरंग ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ षष्ठम तरंग लिख्यते ॥६॥

श्लोक -- मार्गक्रमेण पवनाधी स्वरो लौक यगतम् ।

मथुरामेष एतस्य कार्या पक्षास्तु पूर्ववत् ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं "सो यवनपति मार्ग के क्रम सूं नाव पर बैठके मथुरा में आवतो भयो है । याके जे कार्याधीश हे ये तो प्रथम जैसे ही अवश्य ही प्रणाम करिवे सूं यह जहांगीर आवेगो यह निश्चय करिके वहां सूं प्रथम ही वेग ही वा गुफा पर जायके वा सन्यासी कूं प्रणाम स्तुति करि सनमान करिके वा भूमि कूं समान करिवे सूं के शिला आदि के भरवे सूं, कि खन सूं, कि मार्जन जल सिंचन तथा कंटक आदि के बिछायवे सूं, के पत्थर, कांकरा हू रज के निवर्त करिवे सूं, के वेदिका की वस्त्रन सूं रचना

सूं, मनोहर कनात, गोल कनातों की, के मनोहर, अमूल अनेक प्रकार के चंदरवान के ऊपर बाँधवे सूं, और सुन्दर शोभा वारी वा वा वांछित वस्तुन के वहां स्तुति करिवे सूं वहां पहेरेदार के, द्वारपाल, प्यादा, असवार तथा घोड़ा, हाथी, हस्तिनी, के महावत तथा अंग सेवक वैसे और हू वा वा सेवा में चतुर के वा वा सर्व के करिवे वारे तांबूल, चमर, छत्र, पनाही, खड़ग धारण करिवे सूं के गायक, नर्तक, वेणु, मुरज आदि के बजायवे वारे, के कायस्थ, के वा वा कार्य लिख रहे कि संग्रह करि रहे, वस्तु कूं लाय रहे, के कहे रहे, वा वा मलेच्छ राज ने तथा सन्यासी के सगरे औरन के हू वहां वहां मर्यादा पूर्वक स्थिति करिवे सूं के वा सन्यासी के सगरे औरन के हू वहां मर्यादा पूर्वक के वा सन्यासी के ठहेरायवे सूं, प्रेम, गौरव के सहित ही वा भूमि कूं वा चक्रवर्ती मलेच्छपति के ठहरवे योग्य ही रचना करते भये हैं । सो सन्यासी तो सगरे ब्राह्मणन कूं बुलायके वैसे और अपने इष्ट, पापी, द्रोही, वंचक, शठ तथा त्रिपुंड धारिवे वारो, के भस्म लगायवे वारो, के बोहोत रुद्राक्ष की माला कूं कंठ में धारण करि रहे, औरन कूं हू बुलवायके अपने पास ही बैठावतो भयो है, अभिमान सूं मुख कों अत्यन्त ऊंचो करि रह्यो, कोऊ कूं पुर, कोऊ कूं गाम, कोऊ कूं देश, कोऊ कूं स्वामी ही बनाय, के कोऊ कूं मलेच्छ चक्रवर्ती को सर्व कार्यपती बनायो चाहे है, के वैसे औरन कूं घोड़ान में, कोऊ कूं पंडितन को, के कोऊ कूं धर्म को वैसे औरन के अपराधीन के नीतिका को. दान कि औरन कूं ब्याह की वैसे अन्य कूं लोप को तथा और कोई कों वस्त्र घर में, के रत्न सुवर्ण में, कि गिणना में, अधिकारी बनायो चाहे है । के वैसे औरन कूं घोड़ान में, हाथीन में, सो मलेच्छ चक्रवर्ती द्वारा सो वा मूर्ख असुर अधिकारी बनायो चाहे है, के श्री महाप्रभुन को वा वा श्रेष्ठ भक्तन को पीड़ा दिलायवे के लिये वा मलेच्छपति के आगे वा वा दुरवचनन कूं कहिवे लिये इच्छा करि रह्यो है, के जा नाव पर अपनी अत्यन्त प्यारी नूर मोहोल के संग देशपति बैठ रह्यो है वा नाव कूं ही टकटकी लगायके देखि रह्यो है तथा वा जहांगीर के आगे मिथ्या दोषन कूं कहवे लिये जाकी जिभ्या में खुजार होय रही है, के देशपति की नाव जैसे जैसे वेग सूं याके आगे आगे आवे है ऐसे ऐसे ये दुष्ट हर्ष विशेषसूं कूदें हैं और श्री महाप्रभुन के भक्त समूहन के वैसे उत्कर्षन कूं स्मर्ण करिके, क्रोध के भार सूं, बारंबार अपने अधर, ओष्ठ कूं दंतन सों ही डस रह्यो है,

के श्री गोकुलेश प्रभुन के त्रिलोकी में विस्मार वारे प्रताप कूं, के शरद रितु के पूर्ण चन्द्र समूह कूं हू विजय करिवे वारे महा उज्ज्वल वैसे बोहोत प्रकार के यश कूं विचार करिके हाहाकार करत हाथ सूं हाथ कूं पीटत, और तुलसी की माला सूं शोभायमान जिनको कंठ है, ऐसे भक्तन के देखवे सूं दृष्टि में जो दुष्ट दाह भयो है वैसे सुनिवे सूं जो कानों में जो रस है दाह भयो है वा देशपति को प्रभुन में अधिक करायके वा दाह कूं शांत ही करिवे की इच्छा वारो होवत ही अपनी गुफा के पास जल के थोरे होयवे सूं अटक रही वा नाव कूं देखिके सो दुष्ट सन्यासी अपने निकट ही आयो देशपति कूं निश्चय करत भयो है । सो देशपति तो अपनी प्रिया के संग वा नाव के भीतर शोभायमान श्रेष्ठ मंडप में विराजत ही अपने खेवटन सूं पूछतो भयो है, "के यह कौन स्थान है इहां लोकन की भीड़भाड़ कैसी है ? अचानक यह नाव काहे कूं अटकी है ।" यह सुनत ही वह कहत भयो है, के "जा दुष्ट ने जबर सूं ही पुराणादि में प्रसिद्ध तुलसी माला धारणादि सगरे वैष्णव धर्म कूं लोप कियो है, तथा वैष्णव समूहन कूं दुःख दियो है, के वा श्रीमद् गोकुलनाथ प्रभु भगवान पुरुषोत्तम में बारंबार अपराध कियो है, वा दुष्ट सन्यासी को यह स्थल है, और जैसे चक्रवर्ती आगे आवतो हतो, जैसे अबहू वाके दर्शन कूं आवेगो, या निश्चय सूं तिहारे देखिवे की इच्छा सूं आप तिहारे लोगन को हू समृद्ध होतो भयो है, और यह नाव तो जल के थोरे होयवे सूं यहां अटक रही है ।" या खेवट के ऐसे वचन सुन देशपति कहेतो भयो है, के "तुम सगरे मिलके बल सूं ही नाव कूं या स्थल सूं खेंचिके ले जायके श्री गोकुलेश प्रभुन के संग द्रोह करिवे वारे या महा पापी पाखंडी, या असुर को हों देखिवो नहीं चाहूं हूं, और देशपति की प्रिया हू विनकूं हाथ संज्ञा सूं यह ही कहेती भई है ।" तब वे सगरे वा नाव कूं खेंचिके आगे चलते भये हैं, तब ही चिद्रूप सो तो विद्रूप होय जातो भयो है, मुख कारो होय गयो, अत्यन्त ही उदास होय गयो, और जे तो वाके पास बड़े उत्साह वारे ब्राह्मण स्थित हते, के वैसे और हू जे स्थित हते वे सगरे ही भग्न संकल्प होयके, कारे मुख वारे होय जाते भये हैं । मलेच्छाधीश ने जब वा भिक्षुक को निरादर कियो है तब सगरे वाके कार्याधीश हू यहां तो हमने वृथा ही यत्न कियो है, यह विचारके दुःखित मन होयके वा सजाई भूमि कूं विगार के कनात आदि कूं बोहोत प्रकार सूं तोड़फोड़ के सब वस्तुन कूं

उठायके सगरे जनन कूं संग लगाय ले जाते भये हैं । कितनेक वहां मूत्र और थूक के और तो मल त्याग करिके, कितनेक और तो अपवित्र वस्तु कूं वहां डारके, कितनेक तो क्रोध सूं वाकी हांसी कूं करिके, और तो कर ताली बजावत वाकों लाज समुद्र में डुबाय के, और तो प्रीतम के विरुद्ध समूहन कूं पठत और तो याकों शोकाग्नि में डारके और अत्यन्त गारी दे के, और तो भगवद गुणन को गान करत, वाकी निन्दा करत, जैसे आये हते वैसे ही जाते भये हैं । सो दुष्ट सन्यासी तो फेर वा मलेच्छेश्वर कूं प्रथम जैसे वश करिवे कूं इच्छा करत, और सगरे मथुरा वारे चौधरी मलेच्छ तथा अन्य हू वाकूं धिक्कार धिक्कार करत पाखंडी कहेते भये हैं । दुष्ट सन्यासी तो फेर हू वा मलेच्छेश्वर कूं प्रथम जैसे वश करिवे कूं इच्छा करत देवता सहित माया मन्त्र को प्रयोग करतो 'भयो है, परन्तु दुर्बुद्धि सों समर्थ न होतो भयो है, जासूं वे सगरे देवता सहित मन्त्र तो महात्मा श्री गोकुलेश महाप्रभुन की प्रबल इच्छा सूं प्रथमही नष्ट होय गये हते, के पीड़ित होय गये हते ।

इति श्रीमद गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो भागीरथी कृतारथ कारणमये नवम कल्लोले वृजभाष्य षष्ठम् तरंगानुवाद समाप्तम् ॥६॥

॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

॥ सप्तम तरंग ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ सप्तम तरंग लिख्यते ॥७॥

श्लोक -- अथ श्री गोकुलेश प्राप्तौ नौकायां परमेश्वरः ।

सनिः शनीकनिरानंद निरजीव परम वृहत ॥९॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, के "याके अनन्तर सो यवन पति नाव सूं श्री गोकुल कूं प्राप्त भयो । वहाँ शोभा रहित, आनन्द रहित, निरजीव कि, अत्यन्त ग्लानि कूं धारण करि रहे, के तेज सूं रहित, के प्रभाव सूं रहित, तुच्छ गामड़ी जैसे भयानक रोगन सूं ग्रसित, जैसे मानो छीन लियो है सर्वस्व जाको, के मानो सर्व प्रकार सूं दग्ध भयो, के मर्मन में अत्यन्त वेध कियो, जैसो

के तुच्छ शत्रु सों विजय कियो जैसो, कि लज्जा, पीड़ा सर्व प्रकार सूं डर्यो, जैसो के चिन्ता सूं व्याकुल भयो जैसो, प्रथम वारे रूप सों रहित ऐसे वां श्री गोकुल कूं देखिके, आयके समीप ठहर रहे सबन सूं पूछतो भयो है, "यह तुछ गामडा सरीखो को गाम है ?" यह सुनिके वे कहेते भये हैं "आप नहिं जानो हो कहा ? कि यह गोकुल है ।" यह सुनिके मलेच्छपति अत्यन्त विस्मित होयके कहेतो भयो है, "ऐसो महा सुन्दर श्री गोकुल ऐसो काहे कूं होय रह्यो है ? जासूं मैंने नहिं पहेचान्यो है ।" यह सुनिकें वह कहेते भये हैं, "शोभा गुण, धर्म, यश श्री मंगल फल सुख जीवन पवित्रता, विद्या, तेज, फोजका, आधार जो श्री गोकुलपति हैं, सो वहां विराजमान नहीं हैं, सो निरदोष पुरुषोत्तम मुगटमणि श्रीजी तिहारे वचन कूं आदर करत अब सोरम जी में विराजें हैं, वैकुण्ठन के मुगटमणि सम्बन्धी शोभायमान सूं रंजित होय रहे हैं, चरण कमल जाके ऐसो हू सो श्री गोकुल वा श्री गोकुलेश प्रभुन सों त्याग कियो है, तुच्छ गामंडे सदृश प्रतीत होय रह्यो है ।" यह सुनिके यवनेश्वर आसफखान कूं कहेतो भयो है, के "तुम्हारी बुद्धि बोहोत अच्छी है, तथा श्री गोकुलाधीश प्रभुन में भक्ती हू है, तासूं ऐसो विनय मिल्यो पत्र कछुक लिखो जासूं सो ईश्वरेश्वर श्रीजी आगरा में मोकूं दर्शन देकर अपने निज धाम श्री गोकुल में पधारके याकूं शोभित करें, और हौं तों वैसे वैसे अपराध करिवे सूं लज्जा सूं पीड़ित होवत ही वा महात्मा श्री गोकुलेश प्रभुन के आगे कछु नहीं लिख सकूं हूं, रसिकन के तथा ईश्वरन के सर्व प्रकार सूं चक्रवर्ती वा गुणसागर श्री महाप्रभुन को यह गोकुल ही निवास योग्य स्थल है ।" ऐसे कहेत भयो है । तब गिरधरजी को पुत्र जो दामोदर है के गोपीनाथ है सो कुटिल हाथ में तुलसी माला लैकें जमुना जल में बारंबार डूबत, डूबत, दौड़त, गिरत, परत, उठत ही पीछे आवे है । तब मलेच्छाधीश ने पूछो के "या रीति सों मेरे पास आय रहे यह दोय को हैं ?" तब समीप वासी लोगन ने कह्यो "श्री गोकुलेश प्रभुन के भतीजा हैं ।" यह सुनिके देशपति श्री महाप्रभुन के सम्बन्ध के गौरव सूं नाव कूं पठायके बिन दोनोंन कूं अपने समीप बुलवाय के कहेतो भयो है के "तुम दोनों मोकूं कहां प्रार्थना करो हो ?" तब वे कहेते भये हैं के "तुलसी माला कूं तुमसों पेहरवे के लिये प्रार्थना करें हैं ।" तब मलेच्छाधीश ने कह्यो "के निशंक होयके

पहेरो ।" तब विनने कह्यो के, "यह माला तुम अपने हाथ सों देवो ।" तब वो मलेच्छपति वा माला कूं दोनों के प्रति देतो भयो है । ऐसे वे दोनों पेहेरके तब दुरबुद्धि वे दोनों ही महाप्रभुन के अर्थ हू वा माला कूं प्रार्थना करते भये हैं । "कि यह माला श्री गोकुलनाथजी के लिये देवो ।" तब मंद मंद हंसत मलेच्छाधीश कहेतो भयो है, के " वा महाप्रभुन के प्रति हों कहा माला देंवुं ? वा महाप्रभुन ने, के वाके सेवक जनन ने मोसूं, के मेरे जनन सूं, के वा दुष्ट सन्यासी सों, डरके तुम जैसे प्रथम या माला कूं त्याग नहीं करी है, के दासन के सहित मोकूं, के पाखंडी या सन्यासी कूं विजय करिके विश्व के हितकारी निरन्तर द्रढ़ व्रत, सत्य प्रतिज्ञा वारे वैसे महावीर वा श्री महाप्रभुजी ने ही अपने में, के अपने जनन में, ही यह तुलसी माला अचलकर, रक्षा करी है, सो श्री गोकुल प्रभु ही या माला कूं पेहेरायवे वारे हैं, दाता हू सो ये ही हैं, रक्षक ज्ञाता ये ही हैं, पर्यंतक हू, सो ये ही हैं, किन्तु सर्व वैष्णव धर्मन के सदैव रक्षक सो प्रभु ही हैं, और सन्यासी को कहिवे सूं मैं तुलसी माला धारणादि सगरे वैष्णव धर्मीन कूं दुःख देवे वारो हों, तो तुम जैसेन कूं तुलसी माला नहीं देंवूं हूं, किन्तु श्री गोकुल प्रभु हू मेरे द्वारा तुम प्रति तथा अन्य द्वारा अन्य के प्रति हू सोई ही माला दे रहे हैं ।" या प्रकार सूं मलेच्छपति के वचन कूं सुनिके दोनों भैया मस्तक कूं नीचो नवायके डरके ही ठहेर जाते भये है, और चतुर मलेच्छपति तो या प्रकार सों विनको निरादर करिके अपनी राजधानी आगरा में जातो भयो है । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, याके अनन्तर श्री गोकुल प्रभु, अपनी कृपाशक्ति जी ने वरनन करी जो अपनी आधि दैविक गोकुल की विज्ञापना है, वाकूं अपने हृदय में धारण करते भये हैं, वा श्री गोकुल की जो आधि भौतिक परम्परा, वाकूं अत्यन्त शोभायमान करिवे लिये, कृपासागर विचारकरते भये हैं । वा समय में गोधु नाम जो महाप्रभुन को भक्त श्रेष्ठ है, सो सूकर क्षेत्र में आयके प्रभुन के आगे प्रणाम करिके विज्ञापना करत भयो है, "हे महाराजाधिराज ईश्वरेश्वर महाप्रभु, श्री आपकों देशपति आगरा में दर्शन कियो चाहे है, और श्री आपके निवास कूं अपने श्री गोकुल में ही वांछे है, और दुष्ट, पाखंडी, अत्यन्त नीच वा सन्यासी के मुख को हू न देखवे सूं वाको अत्यन्त निरादर करिके अब अपने आगरा में स्थित है ।" ऐसे वा गोधु की विज्ञापना

कूं सुनिके वापर श्री महाप्रभुजी बड़े प्रसन्न होते भये हैं । याकूं वधाई हू बोहोत देते भये हैं, तथा उत्तम प्रसाद के लड्डुआन के थार सूं श्रीहस्त सूं बोहोत ही लड्डुआ उठाय उठाय के आदरपूर्वक लायके करुणा रस के सागर श्रीजी स्वयं ही वा गोधू कूं लिवावते भये हैं । या अवसर में ही श्री महाप्रभुन को भाणेज मधुसूदन भट्ट कछु कार्य के अर्थ श्री गोकुल में गयो हतो वहां आसफखान सूं विज्ञापना पत्री कूं लेके वेग ही सोरम में आयके श्री महाप्रभुन के आगे नर्म होयके वा पत्री कूं लायके अर्पण करत भयो है ॥१॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो भागीरथी कृतारथ कारणमये नवम कल्लोले वृजभाष्य सप्तम तरंगानुवाद समाप्तम् ॥७॥

॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

॥ अष्टम तरंग ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ अष्टम तरंग लिख्यते ॥८॥

श्लोक -- त तो भक्त धरौस्ये छा मुत्कहाय पनेशित ।

अरदा या दर्शनेस्य स्य गोकुले विसदांस्थिते ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के तब श्री करुणासिन्धो श्री गोकुलाधीशजी भक्त श्रेष्ठ वा देशाधिपति तथा आसफखान के हू अपने दर्शन में कि गोकुल में सदा स्थिति में इच्छा कूं जानके स्वजन सेवकन के संग आगरा नगर को उद्देश करिके पधारते भये हैं ॥ तब गूढ़ भाव है प्रिय जाको ऐसे सो परम सर्वज्ञ करुणासागर श्रीजी वहां पधारके भक्त आसफखान के प्रति के मलेछन के ईश्वर देशपति के प्रति दुर्लभ अपने दर्शन कूं देते भये हैं । तब मलेच्छपति आपके आगे आयके अपने मन, शरीर, वाणी सों प्रणाम करतो भयो है, तथा एकांत में सो नूरमोहोल हू मन वाणी शरीर सूं प्रणाम करती भई है । सो याकूं श्री महाप्रभुजी अंगीकार करते भये हैं । तब सो भक्त देशपति श्री महाप्रभुजी सूं कुशल प्रसन्न पूछतो भयो है, करुणासागर प्रिय श्रीजी मंद हास्य विलास पूर्वक अक्षर अक्षर में अमृत समूहन कूं वर्षा करत उत्तर देते भये हैं तब विलास पूर्वक हंसत हंसत भक्तवर देशपति श्री महाप्रभुन को प्रसन्न करतो

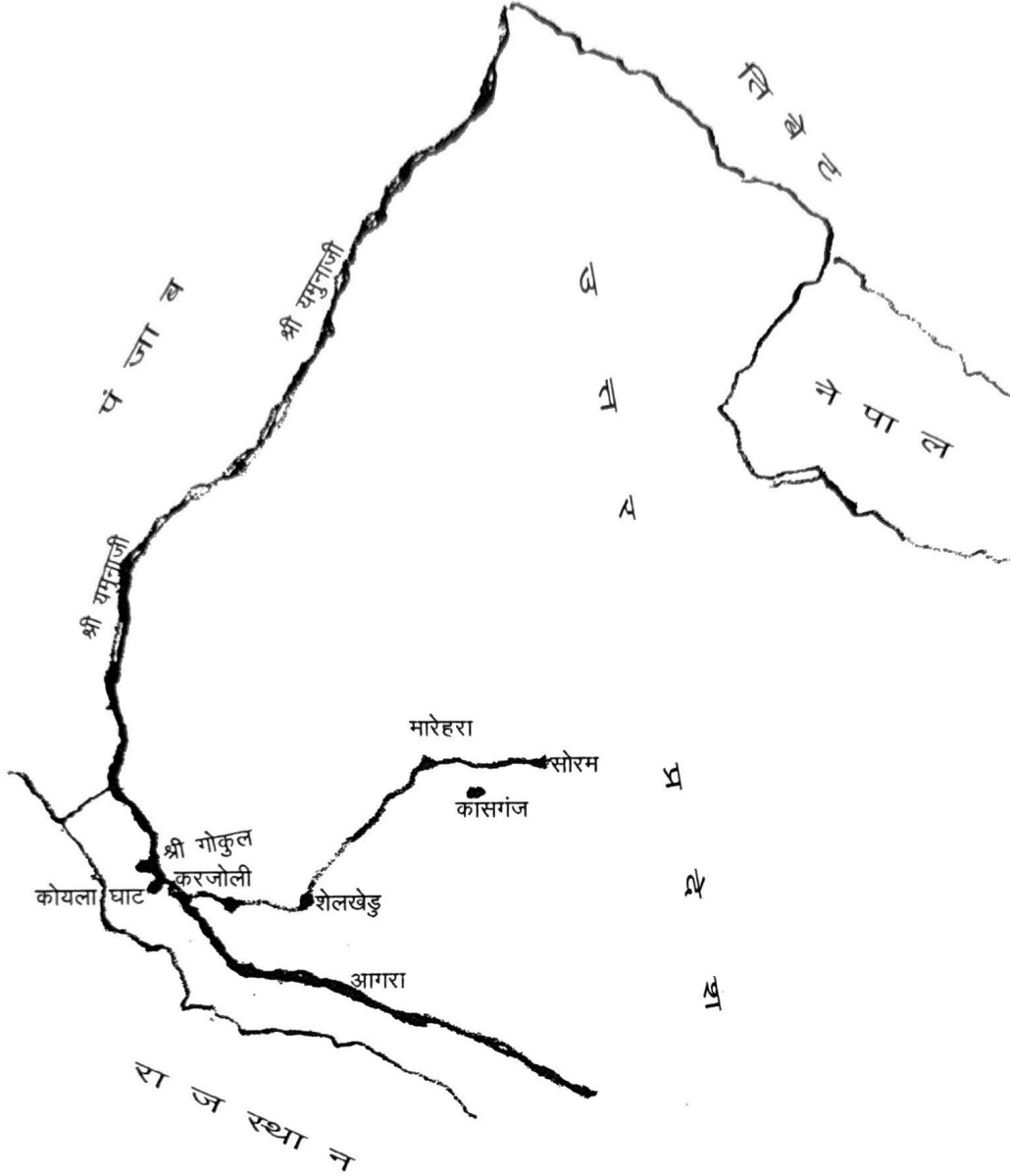
भयो है, के श्री आपको निवास सूकर क्षेत्र ही रुचे है ? तब श्री महाप्रभु जी मंद हास्य पूर्वक आज्ञा करते भये हैं के "देशपति तुमारे वचन सूं तिहारे वात्सल्य के परवश होयके सूकर क्षेत्र में वसे हैं, हमारो अत्यन्त प्रिय सगरे श्रेष्ठ गुणन सों शोभायमान सुन्दर प्रसिद्ध सदैव निवास स्थल तो श्री गोकुल ही है ।" यह सुनिके सो देशपति तो पश्चाताप समूह के सहित ही कहतो भयो है के "हां हां सत्य है, सत्य है । श्री आपको योग्य स्थल तो सुखदायक उत्तम सर्वकाल सूं निजधाम श्रीमद् गोकुल ही है, सो अपनी इच्छानुसार अपने सुख अनुसार वा श्री गोकुल में ही आप निवास करें, सो श्री गोकुल श्री आपके सगरे मनोरथन कूं पूर्ण करिवे वारो सदैव ही होय । विजय नगारेन कूं बजावत ही तहां शत्रुन के हृदय कूं शत प्रकारन सूं के हजारन प्रकारन सूं भेदन करत वा श्री गोकुल में ही पधारें, अपने श्री गोकुल कूं त्याग के मेरे भय सूं वा सोरम में निवास करि रहे श्री आपको बोहोत ही श्रम भयो है । सो मायावी सूं, सदैव बोहोत प्रकार सूं डर रहे मेरे वा अपराध कूं श्री आप क्षमा करोगे । श्री आप तो सर्व पर दया ही करो हो ।" ऐसे याके वचन कूं सुनि कर गूढ़ भाव के महासागर वा देशपति कूं भगवान श्रीजी अभिनन्दन करिके सगरे जनन सों स्तुति किये भये ही अपने डेरा कूं शोभायमान करते भये हैं और मुकुन्ददास तो ज्ञानी विशेष सो होई ईश्वरेश्वर महाप्रभुन कूं विज्ञापना करत भयो है के "हे महाराजाधिराज, हे ईश्वरेश्वर, तो लों आप यहाँ ही बिराजो जो लों श्री आपको सगरो सूकर क्षेत्र में वर्तमान सगरो सर्व स्वयं ही आवे है," तब अपनो जानिके मेरो ही हाथी घोड़ा, रथ, प्यादा आदि सगरी सम्पदा कूं अंगीकार करिके इहां सूं वेग ही पधारोगे । और आसफखान ने हू या प्रकार सूं विज्ञापना करी है । तब श्री महाप्रभुजी आज्ञा करते भये हैं के लौकिक संपदा सूं तो हमकूं अणुमात्र हू कार्य नहीं है । हम तो अपनी सम्पदा सूं सदैव ही शोभायमान रहे हैं होय है । और सूकर क्षेत्र में विराजमान अपने सेव्य स्वरूप श्रीनाथजी के संग ही हमकूं अपनी श्री गोकुल के प्रति प्रस्थान उचित है । ऐसे आज्ञा करिके श्री महाप्रभुजी वहां सूं प्रस्थान करिके सूकर क्षेत्र में डोल उत्सव के दिन श्री गिरधारी स्वरूप श्रीनाथजी के मनोहर राजभोग होय जाने पर पधारते भये हैं । वहां देशपति के मिलनादि वृत्तांतके सुनायवे सूं अपने जनन कूं आनन्दित करत और वहां के निवासीन कूं सगरे जननके उद्धार कूं अत्यन्त मनोरथ कूं पूरण करत

वांछित पदारथन कूं बारंबार दान करत श्री महाप्रभुजी तीन दिन लों विराजमान होते भये हैं । और श्री गंगाजी कूं निरन्तर कृतार्थ करिके और सम्मति लेकर तीन्यो जगतों के पति श्री महाप्रभुजी दास, स्वजन, सेवकन के संग ही वहां सूं चैत्र मास की कृष्ण पंचमी के दिन प्रस्थान करिके माहार नाम गाम कूं अपने निवास सूं शोभित करते भये हैं । वहां के निवासी जनन कूं पावन करते भये हैं बड़े नगारान के शब्द सूं के वीणा वेणून के शब्दन सूं वेदोच्चारण समूहन की स्तुतीन सूं, के जय जय शब्दन सूं निरन्तर सेवा किये भगवान श्रीजी मार्ग वारे जीवन कूं कृतार्थ करत षष्ठी तिथि में सकरा गाम में पधारते भये हैं । हर्ष सहित निवास हू करते भये हैं । ऐसे नवमी तिथि में शैलखेरा गाम में पधारते भये हैं । अष्टमी के सूर्योदय समय कणजोली गाम कूं पावन करिके भरथिये गाम में पधारवे की इच्छा कर रहे हे । तब श्री आपके सेवक जन विज्ञापना करते भये हैं, के महाप्रभु श्री आप तो गायन के आगे चलिवे में समर्था को विचारके आगे चलिवे की इच्छा नहीं करें हैं, परन्तु वह तो अब उत्साह विशेष सों सगरी ही प्रायः श्री गोकुल के निकट ही प्राप्त होय गई हैं । अब वहां विराजवे सूं कहा है, हे महाप्रभो आगेही पधारिये । ऐसे विनके वचन कूं मानके ईश्वरेश्वर श्रीजी कोला गाम के पास ही श्री यमुनाजी के तट पर ही सुख पूर्वक निवास करते भये हैं, और श्रेष्ठ महूरत के अर्थ नवमी तिथि में हू अपने दर्शन के अर्थ आये मथुरा पुरी वासी, महावन वासी, के वा समीप वारे गाम निवासी के आगरा वासी भक्त जनन कूं प्रिय वचन मंद हास्य विलासन सों सुख दान करत वहां ही निवास करते भये हैं ॥१॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो भागीरथी कृतारथ कारणमये नवम कल्लोले वृजभाष्य अष्टम् तरंगानुवाद समाप्तम् ॥८॥

॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

श्री कल्लोलजी नवम् तरंग ८ से ९



संवत् १६७७ चैत्र वद - ५ से चैत्र वद - १०

चक्रवर्ती जहांगीर ने श्री महाप्रभु श्री गोकुलेशजी को सोरम से श्री गोकुल पधारने की विज्ञापना करी सो सोरम से श्री गोकुल पधारो

॥ सार्वभौम विजय ॥

॥ नवम तरंग ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ नवम तरंग लिख्यते ॥९॥

श्लोक -- अथ वर्षेस प्रभुनी रस शीता ॥

फांसत्मिते चैत्र कृष्ण दशम्यां सुमुहूर्ते द्वितये गते ॥९॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के संवत् १६७७ में चैत्र कृष्ण की दशमी तिथि में बुधवार चार घड़ी दिन चढ़ने पर श्री गोकुलाधीशजी श्री गोकुल में प्रवेश कूं करते भये हैं, तथा श्री गोकुल में प्रवेश करि रहे श्री महाप्रभुन के आगे चिरकाल सों दर्शन की लालसा वारे सगरे भक्त, स्त्री, पुरुष, सेवक, ज्ञाति वारे, बाल, वृद्ध, सुहृद, सगरे श्रेष्ठ बंधु, के सगरे गाम वासी हू महा प्रेम सों आवते भये हैं । भगवान श्रीजी हू आगे आयके आप विनको यथायोग्य ही मान देते भये हैं । तब श्री महाप्रभुन को दर्शन करि रहे विन सबन के ही हृदय में आनन्द के आंसुन के समूह रूप लहेरीन सूं मिल्यो हर्षमय समुद्र उछल्लतो भयो है । तब बोहोत ही विचित्र बाजे अत्यन्त ही बजते भये हैं । वहां हजारन मंगलमय नगारा बजते भये हैं । भेरी, पटह, गौमुख, शहेनाई वैसे और हू बाजे बजते भये हैं । चारों ओर सूं शब्दाद्वैत के प्रसरवे सूं श्रीमद् गोकुल में कोऊ को कछु हू वचन सुनिवे में नहीं आवे है । और व्यवहार तो हाथ भ्रू, नयन आदि की संज्ञा सूं ही होतो भयो है । श्रीमद् गोकुल तो वहां वहां, धारण किये कुलन सों मानो प्रिय के पधारवे सम्बन्धी हर्ष सों प्रफुल्लित ही होय रही है । और श्री जमुनाजी के गुप्त भाव को हू कितनेक कृपापात्र वाके प्राणनाथ के आलिंगन में अत्यन्त लोभी चारों ओर बारंबार उछल रहे तरंग रूप भुजान में प्रतीत करते भये हैं । और प्राणनाथ के स्वरूपामृत को पान करिवे लिये अत्यन्त तृषित भये शुक, पिक, हंस, सारस, मोर, सगरे पक्षी हू अपने भाव कूं सूचना करत मधुर शब्दन कूं करते भये हैं, और प्रिय श्री महाप्रभुजी के पधारवे के प्रसिद्ध होने पर सगरे गुल्म, वृक्ष, लता हू नवीन पल्लवन सों कि मधुर रस कूं करि रहे फूलन सों के मनोहर रस वारे फलन सूं अपने आनन्द कूं बाहिर प्रगट करते भये हैं वेग सूं आय गई गैया को ऊंचे कान, पूंछ वारे

तथा "हंभा" शब्द वारे बछरा हू अपने उत्साह कूं सूचन करते भये हैं । तब सगरे भक्तजन आनन्द पूर्ण होयके वैसे गान करते भये हैं, के जैसे आकाश केवल शब्दमय होय जातो भयो है वा प्रिय को विचित्र तथा अनेक प्रकार के अनन्त कर्मन के असंक्षात गुण वैसी लीलान कूं सुन्दर स्वरा सूं गान करवे सूं अत्यन्त लालसा वारी भक्त नारीगण हैं सो प्रफुल्लित मुख सों वा प्रिय को दर्शन करत पीछे चलती हर्ष विशेष सूं अपने देह आदि कछु कूं हूं नहीं जानती भई हैं, और श्रीमद् गोकुल में तब हर्ष सों चारों ओर हू प्रेम जय शब्द मंगल वस्त्र आभरण तथा चरण शब्द, नूपुरन के शब्द, मोती, रत्न, हीरा, सुवर्ण, भूषणन सों झनकार, के बढ़ रहे उत्साह, अनेक प्रकार के उत्सव, आशा, भारी मनोरथ, क्रीड़ा, वेणु के नाद, सुन्दरता, सुगंधित पदार्थों के उत्तम रस स्पर्श, गान वीणा नाद, विविध प्रकार के नर्म मंद हास्य, मनोहर हास्य, करोड़न परिहास्य, आलिंगन, स्तम्भ, स्वेद, कटाक्षन सूं देखनो, के रोम हर्ष, स्वर-भंग, कंप हर्ष, के आंसू, के ध्यान, दौड़न, वैसे और हू वे वे मनोहर सुगंधित वस्तु पद पद में उदय होती भई है । श्री महाप्रभुन के आगे, पद पद में नाना प्रकार के भक्तजन मनोहर रंग वारे सुन्दर, चन्दनादि के चूर्णन कूं बारंबार बोहोत ही वर्षा करते भये हैं । तब प्रसन्न होय रहे नट, नृत्यकारन के चारों ओर सों हजारन नृत्य ही प्रगट होते भये हैं । तब भक्तजनन ने अत्यन्त वर्षा किये जे कर्पूर चूर्ण की मुष्ठी हैं के चन्दन के चूर्ण हैं, मनोहर असंक्षात प्रकार के सुन्दर वर्ण वारे पटवास हैं, के बूका हैं, के निस्तुष जे कुंम कुंम के रस हैं, सुन्दर जल में डूबे अगर के जे रस हैं, सुन्दर सुगन्धी वारे अंग राग हैं, के अनेक प्रकार के वर्ण वारे जे चन्दन लेप हैं विनसूं वैसे और हू वा वा द्रव्यन सूं सगरो जगत हू तले ऊपर भीतर हू वा वा प्रकार सूं सफेद, के कबहू पीरो, कबहू लाल, कारो, हर्यो, कबहू मिश्रित, कबहू दोय तीन रंग वारो होय जातो भयो है । मार्ग में बहू, बेटी, बेहेन आदि जा पर विराजमान हैं ऐसे मनोहर पताका ध्वजा सुवरण के मनोहर कलशा वारे हजारन सुखपाल शोभायमान होय जाते भये हैं । अनेक रंग वारे सजाये गये सुन्दर सोना, रत्न, मुक्तादिकन की मालन सूं नाना प्रकार के मनोहर रंग वारे पाट के गुच्छन सूं जे शोभायमान हैं के महाप्रभुन के बालक तथा भक्त सुजाती जिन पर चढ़े हैं ऐसे जे पवन समान वेग वारे जे घोड़ा हैं तथा को जन हू जिन पर नहीं चढ़े हैं, केवल घुड़ वेहेल

ही जिनकी लगाम पकर के बड़े यत्न सूं जिनकूं धारण करि रहे हैं ऐसे अत्यन्त शोभायमान होते भये हैं । और सुन्दर शोभित बैल बड़े वेग वारे घोड़ान सूं शोभायमान सुन्दर साज वारे अनेकान रथ शोभायमान होते भये हैं तथा सुन्दर साज वारे अनेकान हाथी, ऊंट तथा प्यादा तथा यूथन के यूथ भक्त तथा हिरण नयनी सुन्दरी जन वहां वहां चारों ओर सों ही प्रकाशमान होती भई हैं । और श्री गोकुल में गोकुलनाथ प्रभुन को जो मार्ग है वाकूं वहां वहां महात्मा भगवदीय सुन्दर मार्जन करते भये हैं, के सिंचन करते भये हैं, के कदली स्तम्भन सों सुन्दर रंग वेल सूं शोभायमान करते भये हैं । वा मार्ग में सुन्दर रूप, गुण वारी जे प्रेम वारी सोहासनी हैं, के सौभाग्यवती सुन्दरी हैं, सो हर्ष सों पूर्ण कलशन को सिर पर धरिके प्रिय के दर्शन की अभिलाषा सूं मार्ग में प्रिय के सनमुख ही ठहेरी हैं, विन सुन्दरीन के मन कूं जबर सूं हरि रही के अपने भीतर के प्रेम कूं सूचन करि रही अपनी दृष्टि सूं वा सगरी सुन्दरीन कूं अभिवन्दन करत अपने घर में प्रवेश करते भये हैं । तब वहां वा प्रिय कूं बारंबार दंडवत प्रणाम करि रहे, के बारंबार स्तुति करि रहे, के निरन्तर जय जय शब्दन कूं करि रहे. प्रेम सूं टकटकी लगाय के वा प्रिय कूं देख रहे, सो वा प्रिय के चरण कमल सम्बन्धी रज में बारंबार अपने कूं वार रहे, विनकूं अपने मस्तकन पे धार रहे, बोहोत प्रकार सों न्योछावर करि रहे हैं । हर्ष सों नाच रहे, के दृष्टि दोष के निवृत्त करिवे कूं राई लोन वार रहे, बोहोत मंगल कृत्यन कूं कर रहे, तथा मार्ग के वा वा वृत्तान्त कूं पूछत वा गोवर्धन पर्वत के वृत्तांत सहित श्री गोकुल के वृत्तांत कूं सुनाय रहे, जो विविध प्रकार के भक्त हैं, तथा वेद पाठन कूं करि रहे, यथा विधि धूप, अक्षत आदि कूं हाथ में लेकर वेद के श्रेष्ठ मन्त्रन सूं श्रीजी के विनय नर्म मस्तक पर बारंबार अभिषेक करि रहे जे ब्राह्मण हैं, के दही के पात्र सूं शोभायमान हैं हस्तकमल जिनके, मंदहास्य सूं प्रफुल्लित है मुखकमल जिनको, ऐसी जे सुन्दर भूषण वारी, दीर्घ नेत्र वारी, नागरी उज्ज्वल वेश वारी, नवीन जोवन वारी गोपी हैं तथा अत्यन्त स्तुति करि रहे सो मागद, चारण, सूतादि हैं, के बंदीजन हैं, के वा प्रिय को दर्शन करिवे लिये आगे आगे होय रहे जे, वे वे अधिकारी हैं, के वा वा कार्यन के करिवे वारे मनुष्य ही हैं, विन सबन को बड़ो ही समृद्ध होतो भयो है । तब वहां भक्तजन प्रेम सों सुगंधित फुलेलन सूं तथा कस्तूरी, कुंमकुंमादि मनोहर प्रसरवे वारी सुगंधी वारे द्रव्यन सूं, प्रभुन को अभ्यंग करते भये हैं, और सुहाते मनोहर

सुगन्धित जलन सूं स्नान करावते भये हैं, तथा श्री अंग के पोंछन लीला, तथा सुन्दर वस्त्र पहेरन की लीला, कुंम कुंम, चन्दन, के तिलक रचना की लीला, प्रगट होती भई है । तब श्रीनाथजी के मन्दिर में पधारवे की लीला तथा वाके सेवकजन की लीला, तथा वा हर्ष के समूहन को ऊँची स्वरा सूं गान, नृत्य जामें विशेष है ऐसो ताल, मृदंगादि को शब्दमय तथा मागध, चारण, सूत, ब्राह्मण, बंदीजनादि के शब्दन सों मिल्यो के वस्त्र भूषण सुन्दर मोती, माणिक, सुवर्ण कूं दान रूप, तथा बोहोत प्रकार की न्यौछावरी सों मिल्यो प्रेम, उत्साह, हर्ष सों पूर्ण बोहोत प्रकार सों ही उत्सव बढ़तो भयो है ।

इति श्रीमद गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो भागीरथी कृतारथ कारणमये नवम कल्लोले वृजभाष्य नवम तरंगानुवाद समाप्तम् ॥९॥

॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

॥ दशम तरंग ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ दशम तरंग लिख्यते ॥१०॥

श्लोक -- अथ तनिर्पत्ये विमुभुः ओं छल्लित प्रेम भी भक्तो ।

निज मन्दिर समेत तस्ते लक्षमा निधान मन मेह ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के या उत्सन को सिद्ध करके निर्दोष चेष्टा वारे श्री महाप्रभुजी उछल्लित प्रेम वारे भक्तन के संग सघरी शोभा लक्ष्मी के निधान रूप अपने निज मन्दिर में पधारते भये हैं । वहाँ आये अंतरंग भक्त तथा रस भक्त, के जे रस के पात्र हैं, वे सदा कृपा रस सूं भरी या महाप्रभुन की अमृतमयी दृष्टि कूं प्राप्त होय रहे हैं । यासूं हर्ष सूं के हर्ष के आंसून कूं प्रगट करत अत्यन्त ही हर्ष कों प्राप्त भये हैं । याके अनन्तर या महाप्रभुन की दान लीला के स्वजनन के धैर्य वर दान की लीला, तथा मधुर पदार्थन के आरोगवे की लीला, के अपने मन्दिर में पधारवे की लीला, प्रगट होती भई है, तथा कृपा रस दृष्टि की वर्षा रूप लीला प्रगट होती भई है, के वा वा भाव के विचारन की लीला वैसे अमृत सों अत्यन्त मधुर अत्यन्त मनोहर और और

हू लीला, भलीभांति सूं प्रगट होती भई हैं । और भक्तजनन ने लाई जो अमूल्य, अतुल्य, सर्वोत्कर्ष, अनेक प्रकार की भेंटा हैं विनकूं महाप्रभुन के सेवकजन हू धरवे लिये उठाय रहे हैं । महाप्रभुन को महा विशाल मन्दिर है, सो हू विनकूं धरिवे कूं हू अवकाश हू नहीं मिलतो भयो है । यहाँ तीरूमल नाम जो नट है सो मलेच्छ के सेवकन सों प्रसिद्ध है वाको पुत्र नित्यानंद है भाग्यवान महात्मा तब भक्ति सों महाप्रभुन के आगे प्रणाम करिके महाप्रभुन के कानों में अमूल्य स्थूल मोती पहेरावतो भयो है । श्री महाप्रभुन की तथा श्री महाप्रभुन के दास समूहन की उज्ज्वलता, शोभा, तेज, इन्द्री शक्ति, बल, कीर्ति, महात्म्य, पराक्रम, उदारता, राजनीति तथा अनुभाव की परम्परा कूं देखिके, सुन सुन के, स्मरण करि करि के, सो दुष्ट पाखंडी सन्यासी शोक समुद्र में डूब जातो भयो है । श्री गोकुलेश प्रभु के कीर्ति रूप पवन सूं के वा पर्वत की विक्षिप्त भई वा दुष्ट सन्यासी की निन्दा रूप जो महा शिला है सो वा दुष्ट सन्यासी के तथा वाके अनुचरन के माथे पर बारंबार गिरिके मृत्यु समान ही वाकी महा दुरदशा कूं कर देती भई है । श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं के श्री गोकुलपति महाप्रभु जी सोरम सों पधारके श्री गोकुल विराजमान हते, तब कोऊ भक्त श्रेष्ठ आपको पूछतो भयो है के “हे श्री महाप्रभु श्री आपकूं तथा श्री आपके भक्तन कूं या प्रकार यह दुष्ट सन्यासी अपराध समूह करतो भयो है तो हू आज दिन लों जीवे है, मर्यो काहे कूं नहीं है ?” यह सुनिके प्राणनाथ श्री महाप्रभुजी आज्ञा करते भये हैं के “वाने जो भगवदीयन में जे अपराध किये हैं अत्यन्त प्रबल वे अपराध समूह ही अपनी निन्दा श्रवण निरादर आदि फल को भोग करायवे लिये वाकूं मरवे नहीं देवें हैं, अन्त में तो नरक में गिरावेंगे ही, वहीं वाको मरण है, जो अपनी निन्दा कूं सो लोकन सूं सुनि रह्यो है ।” श्री कल्याणभट्टजी अब प्रसंग कूं कहें हैं, के श्रीमद् गोकुल में श्री गोकुलाधीशजी रजत, कंचन, मणी, मुक्ता, हीरा और अनेक प्रकार की माला तथा कान के भूषण अंगुलीन के भूषण मुद्रिका, हस्त के भूषण कंकणन को दान करत, घोड़ा, हस्ती, मनोहर रथ, धन, वस्त्र, अन्न वैसे और और वस्तु कूं हू सगरे पुरुषन के प्रति देवत ही सदैव हजारन ब्राह्मणन को भोजन करावत ही विराजमान होते भये है, तथा रिण वारेन कूं रिण को निवर्त करावत, के दरिद्री पुरुषन के दरिद्र को नाश करत, के पुत्र पौत्रादिक विवाह यज्ञोपवीतादि सगरे उत्सव कृत्यन कूं

करत, और वस्त्र, अन्न वैसे और हू वा वा वस्तु तथा सहायक और धरम के दान सूं, के अपने स्वरूप सों, के अपने भक्तन सों, सगरे जनन के उद्धार कूं करते भये हैं । और बोहोत प्रकार के वैदिक मार्ग कूं हू प्रवर्त करत और कृपा विशेष सों अपने जीवन के आगे श्रीमद् भागवत को व्याख्यान करत तथा श्री आचार्य चरण ने श्रीमद् भागवत पर करी सुबोधिनी टीका सूं के और हू आपने प्रगट किये ग्रन्थन सों स्पष्ट कियो है, श्री गोस्वामीजी ने श्री सुबोधिनीजी सूं प्रगट करी टीपणी सूं श्री गोवर्धनधारी की सेवा सों स्पष्ट दिखायो जो प्रभुन के प्रेम समूह सों सुन्दर तथा प्रभुन को प्राप्ति करिवे वारो जो पुष्टि मारग है वा पुष्टि मारग को श्री गिरधारीजी की सेवा सों आदर पूर्वक स्पष्ट करत, पालन करत, बढ़ावत हीं वाके आवांतर काल जो रसात्मक कृष्ण की प्राप्ति है वाको दान करत, के मो सरीखे दीनन में विशेष सों ही निमर्याद ही विना प्रयोजन के प्रसर रही अपनी कृपा के अनुकूल होय के वाको परम फल जो अपने स्वरूप रस की प्राप्ति है, वाको हू दान करत, और वा वा पुरुषों सों आय रहे पंडितन के प्रति असंक्षात धन को दान करत, विनकूं वचनामृत सों अभिषेक करत, रोगी, अंधे, बहेरे, पगले, मूर्ख, हाथन सों रहित, तथा बूढ़े, बाल, अनाथ कूं हू विशेष सूं पालन करत, प्रकाशमान होते भये हैं । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, के मनोहर वा अट्टावन तरंगन सों मैंने महाप्रभुन की भगवद् धर्म की रक्षा रूप लीला वरणन करी है, वा लीला कूं पढ़त, के कीरतन करत, के व्याख्यान करत, के विचारत, के प्रणाम करत, आदर करत जो जन हैं, सो बाहिर के, भीतर के सगरे शत्रुन कों विजय करें हैं, तथा सगरे जनन के सगरे अर्थन के सिद्ध करिवे वारी अत्यन्त दुर्लभ श्रेष्ठ भक्तन की संगतीन कूं अत्यन्त प्राप्त होय है, और भक्तन में परम प्रीति भगवान में स्थिर होय तथा भक्ति को हू प्राप्त होय है, तथा श्री गोकुल प्रभुन की परम दया और सगरे विघ्न की निवृत्ति तथा महाप्रभुन के निजधाम श्री गोकुल में निश्चल निवास, के या महाप्रभुन में परम प्रेम, तथा वा महाप्रभुन के रसमय दर्शन कूं, के वा महाप्रभुन के प्रेम वारी वा वा कथान कूं प्राप्त होय है, तथा अस्मादिकन ने अनुभव किये जे महाप्रभुन के विशेष कृपापात्र प्रेम भक्ति वारी मनोहर या सुन्दर नयन वारी प्यारी के संग जे महाप्रभुन के वैसे मंद हास्य विशेष हैं, विनके अत्यन्त दुर्लभ अनुभव कूं हू प्राप्त होय हैं, और पुष्टि मार्ग को जो सदा परम

मधुर फल है वाकूं मुक्ति सों अधिक जानें हैं, वा महा फल कूं हू निरन्तर प्राप्त होय हैं, और श्री गोकुलपति हू जाके गुण आदि को वरणन करें हैं, ऐसे महाप्रभु के संग कूं हू सो सुबुद्धि पुरुष प्राप्त होय है, और धर्म अर्थ काम मोक्ष के सिद्ध श्रेष्ठ इन्द्र पद, महेद पद की सार्वभौम सर्वाधिपति भाव वैसे और हू सगरे याके ही भीतर आय जाय हैं, के यह महाफल की प्राप्ति में वे सगरे ही तुच्छ प्रतीत होय हैं विनकी अपेक्षा नहीं रहे है । विशेष कहा कहें, के पुरुषोत्तम के मुगटमणी सर्व के मूल रूप भगवान जो स्वतन्तर प्रभु सर्वेश्वर शिरोमणी प्रिय श्री गोकुलाधीशजी हैं सो वा जीवन कूं अपनाय के अपनी योग्यता सूं वाकूं कृतार्थ करत तथा सदैव मनोरथ सों ही अधिक सर्व फल को याके प्रति दान करत, वा जीव के वस होयके ही रहें हैं । वाकूं क्षणमात्र हू नहीं त्याग करें हैं, और यह महा कृपापात्र भयो जीव अपने वा महाप्रभुन कूं जो जीव जा वांछा के प्रति देखे है, वाके ही वैसे वश होय जाय हैं, और जो जन धन की अभिलाखा करे है, सो धन को प्राप्त होय है, जो राज की अभिलाखा करे है, सो राज कूं प्राप्त होय है, और भक्ती कूं जो बांछें हैं, सो भक्ति पावे है सो श्रेष्ठ जन सगरे कामना कूं प्राप्त होय हैं ॥१॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो भागीरथी कृतारथ कारणमये नवम कल्लोले वृजभाष्य दशम् तरंगानुवाद समाप्तम् ॥१०॥

॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

॥ एकादशम् तरंग ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ एकादशम् तरंग लिख्यते ॥११॥

श्लोक --

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी आज्ञा करें हैं गंगाजी कों कृतार्थ करवा रूप नवम कल्लोल है उनके पहले तरंग में श्री यमुनाजी की विज्ञप्ति कूं जानकर सुन्दर मुहूरत कूं निरधार करवे के अनुकूल सब करके प्रभुन को सोरम तीर्थ पर पधारने को मैंने वर्णन कियो है । वामें प्रभुन की कृपाशक्ति को आधि भौतिक गोकुल को समाधान करनो, तथा महावन के पास प्रभुन के निवास सूं भूमि

की शोभा, महा नगर रूप सूं शोभा भई है । यहां सात दिन विराजनो फिर ब्रह्मांड घाट तीर्थ में बीस दिन बिराजनो, यहां कुटिल सन्यासी ने गोकुल सूं न पधारवे को जो कह्यो, सो वाकों दूर करनो, जैसे प्रभुन ने कह्यो सो मैंने कह्यो है । अब दूसरे तरंग को प्रसंग कहूं हूं सन्यासी उदास होयके वकवाद करी सो मथुर पंड्या ने प्रभुन के आगे कह्यो प्रभुन ने अमृत सूं मीठो वचन कह्यो के ये पापी सन्यासी धर्मात्मा वादशाह कूं मिलेगो तो कछु कहेगो ? मिलेगो नहीं तो कहा कहेगो ? जै जै कार के शब्द तब प्रगट भये सन्यासी कूं बड़ो कलेश भयो । प्रभुन को श्री गोवरधन पर्वत पर पधारनो, गोवर्धननाथजी को दर्शन करिके, फिर आनो, वादशाह के लेख पत्र को न देखकर सोंख गाम में पधारनो, चन्द्र ताल तलाब पर डेरा करनो, गंभीरा गाम के आलमराय को, एक वैश्या के संग लेके आवनो, ये सब दूसरे तरंग में मैंने कह्यो है । अब तीसरे तरंग में प्रभुन को सोरम तीर्थ पर प्रवेश करनो, वहां के ऊंचे डूंगर को अपने सेवकन सूं समान तट रूप बनावनो, राजपुर डूंगरजी को यहां आवनो प्रभुन में अत्यन्त प्रेम सूं यहां चोरन को भय दिखावनो यहां के चोर बोहोत बुरे हैं, लोकन कूं बहोत दुःख देवें हैं ऐसो कह्यो है । यामें सबकूं समाधान करवे वारो प्रभुन को वचन मैंने कह्यो है । गंगाजी कों प्रभुन ने जो कृतार्थ कियो है, श्रीनाथजी की सेवा, तथा प्रातःकाल श्री प्रभुन के जन्म महोत्सव को वर्णन भक्तन की प्रसन्नता, मैंने तीसरे तरंग में कही है । अब चौथे तरंग में चोर ने प्रभुन को बैल चुरायो, प्रभुन के प्रताप सूं चोर को पुत्र मर गयो, वासूं डरके बैल कूं वापस लायो, प्रभुन ने अष्ट तीर्थ, दस तीर्थ को जो पावन कियो है, लोकन को दर्शन आदि थी कृतार्थ कियो है, सो मैंने कह्यो है । दुष्ट कुबुद्धि सन्यासी ने यहां पत्र भेजं अन्नादि के बेचने को जो निवारण कियो है । उद्यम नाम बनिया ने जाको जो चाहिये सो पोंहोचाय देवे की प्रभुन के आगे विनय करी, जहांगीर पादशाह को पत्र आनो, डूंगरजी को सब वेपारीन सूं इहां दुकान करने कूं कहनो कह्यो है, मोहनराय तथा प्रहलाद गुराहर को प्रभुन की शरण आवनो, घास, लकड़ी आदि की सेवा करनो यह कह्यो है । पूनम के दिन चन्द्र ग्रहण में गंगाजी में प्रभुन को स्नान करनो, आदि मैंने कह्यो है । गिरधरजी को लीला में पधारवे सूं भामिनी बहूजी के समाधान लिये प्रभुन कों अपनी गोकुल पधारनो, भोजन वगैरे पुष्पावती के घर करनो, अपने घर न करनो, वहां सूं

गोवर्धन पर्वत पर पधार श्री गोवर्धन नाथजी को दर्शन करि फिरि पधारनो, विहारी कवि कूं घोड़ा देनो ये चौथे तरंग में मैंने कह्यो है । अब पांचमे तरंग में बादर समूह को झुकानो वाणी मात्र सूं हठ जानो, जहांगीर को काश्मीर सूं आगरा नगर के लिये आनो, रस्ता में उदर को शूल होनो उनको निवर्त करवे कूं सारंगदेव के हाथ सूं मथुरा में ब्राह्मणोंके दान के लिये सोनो भेजनो, वामें नूरमोहोल ने कह्यो गोकुल कूं त्याग करानो, ये अपराध के वा कष्ट कूं श्री गोकुलनाथ को स्मरण करो कष्ट दूर होयगो । तासूं शूल को कष्ट दूर होनो, चिद्रूप को ब्राह्मणन कूं सोनो न देनो, सोना अपने पास रख लेनो, तासूं वा सन्यासी पर जहांगीर नूरमोहोल को क्रोध, दिल्ली में विरक्त म्लेच्छ संग जहांगीर को संवाद, विरक्त म्लेच्छ ने सन्यासी की जे निन्दा करी है, प्राणनाथ की जे यथार्थ स्तुति करी है, वाको सुनकर जहांगीर कों बड़ो पश्चाताप, पांचमे तरंग में कह्यो है । अब छठे तरंग में अपने, नूरमोहोल, आसफखान सब परिवार सहित जहांगीर को मथुरा में आवनो, सन्यासी कूं न देखनो, तासूं सन्यासी की उदासीनता, वामें जहांगीर तथा नूरमोहोल तथा सबन को सन्यासी पर तिरस्कार, प्राणनाथजी कूं बड़ो जाननो ये मैंने छठे तरंग में कह्यो है । अब सातमे तरंग में अनेक वार देखी गोकुल के पास जहांगीर को आवनो, वाके निस्तेज भाव को देखकर ये कौन-सो शोभा रहित गाम है ? निकट वासीन सूं पूछनो, गोकुल है, ऐसे उत्तर में जहांगीर को आश्चर्य तथा प्रभुन के गुणगान तथा प्रभुन के बुलायवे लिये आसफखान कूं कहेंनो प्रभुन के सम्बन्ध सूं प्रभुन के भतीजा कूं माला देनी । प्रभुन की सराहना करनी तामें प्रभुन के भतीजा की उदासी मैंने कही है । जहांगीर को आगरा नगर में आनो, गोधु सेवक को प्रभुन कूं वधाई देनो, जहांगीर की विनय प्रार्थना सुनानी, आसफखान की विनय कूं मधुसूदन भाणेज ने जो सुनायी सब मैंने सातमे तरंग में कह्यो है । अष्टम तरंग में प्रभुन को आगरा नगर में पधारनो, आसफखान और जहांगीर कूं दर्शन देनो, गोकुल में विराजवे लिये जहांगीर की विनय विज्ञापना, मुकुन्ददास तथा आसफखान ने आगरा सूं सब अपनी सम्पदा देने कूं और गोकुल आगरा सूं सूधे पधारवे की विनय करी श्री ठाकुर ने मान्यो नहीं यासूं सोरम पधारे यहां तीन दिन बिराजे, वहां सूं गोकुल के लिये पधारनो, क्रम सूं कोला गाम

के पास प्रभुन को पधारनो, और दो दिन विराजनो, ये सब आठमे तरंग में मैंने कह्यो है । अब नवमे तरंग में प्रभुन को बड़े महोत्सव के साथ अपनी गोकुल में प्रवेश करनो मैंने कह्यो है । अब दशमे तरंग में प्रभुन की अनेक लीला भक्तन की भेट पहेरामणी कूं अंगीकार नित्यानन्द ने सुन्दर मोती जोड़ी पहेरायी सो मैंने कह्यो है । प्रभुन की बड़ाई कों सुनके सन्यासी को ताप तथा अपनी निन्दा को सुनके जो जीवन है सो मरन है । जीवन के ऊपर प्रभुन को अनेक प्रकार को अनुग्रह, मैंने कह्यो है । ऐसी माला, तिलक आदि भगवद् धर्म की रक्षा रूप लीला के श्रवण आदि में अनेक प्रकार के फल मैंने कहे हैं । और अगियारमे तरंग में सगरे तरंगन को अर्थ संक्षेप में दिखायो है । श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं के हे रसिका मधुर फल रूप श्रीमद् गोकुलेशजी प्राप्त करायवे वारे सगरे भक्तन कूं सगरे वांछित देवे वारे, सगरे भक्तन कूं अनिष्टन सूं निवारण करिवे वारे वा सगरे कल्लोलन कूं प्रेम सहित चित्त में धारण करत कान रूप अंजुली सूं जो आगे वर्णन करूं वाको रसिकजन भर भर पान करें ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो भागीरथी कृतारथ कारणमये एकादश कल्लोले वृजभाष्य एकादश तरंगानुवाद समाप्तम् ॥११॥

॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥